BYJU'S EXAM PREP

Target UPPCS 2021 Geography

Short Notes for Quick Revision

byjusexamprep.com

भारत एवं प्रशासनिक इकाइयाँ: राज्य और केन्द्रशासित प्रदेश

भारत के भौतिक प्रदेश

- भारत भारतीय प्लेट पर स्थित है, जो हिन्द-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट का उत्तरी भाग है। हिन्द-ऑस्ट्रेलियाई प्लेट की महाद्वीपीय क्रस्ट भारतीय उपमहाद्वीप का निर्माण करती है।
- भारत 8०4’ उत्तरी एवं 37०6’ उत्तरी अक्षांश और 68०7' पूर्वी और 97०25' पूर्वी देशांतरों के बीच ग्लोब के उत्तरी गोलार्ध में स्थित है।
- दक्षिणी सीमा निकोबार समूह के द्वीपों के अंतिम द्वीप को कवर करने के लिए 6o45' उत्तरी अक्षांश तक जाती है। दक्षिणतम छोर को पैग्मलियन पॉइंट या इंडिया पॉइंट कहा जाता है।
- कर्क रेखा भारत के मध्य भाग से गुजरती है तथा गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम आठ राज्यों से होकर गुजरती है।
- 15,200 किमी की कुल स्थलीय सीमा दलदली भूमि, रेगिस्तान, मैदानों, पहाड़ों, बर्फ से ढके क्षेत्रों और घने वनों से होकर गुजरती है।
- मुख्य भूखण्ड की कुल समुद्री सीमा 6100 किमी है जो बढ़कर 7516 किमी हो जाती जब हम इसमें अंडमान-निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह की तटीय सीमा इसमें जोड़ते हैं।
- भारत के नियंत्रण में 32,87,263 वर्ग किमी का कुल भौगोलिक क्षेत्र है जो पृथ्वी के क्षेत्रफल का लगभग 0.57% और विश्व के भू-भाग के कुल क्षेत्रफल का 2.4% है।
- रूस, कनाडा, अमेरिका, चीन, ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है (सभी का उल्लेख अवरोही क्रम में किया गया है)।

- **भारत का क्षेत्रफल यूरोप के क्षेत्रफल (रूस को छोड़कर) के लगभग बराबर है, कनाडा का एक तिहाई, रूस का एक-पांचवा भाग, जापान का आठ गुना और यूनाइटेड किंगडम का बारह गुना है।**
- **भारत लगभग एक चतुर्भुज के आकार का है। उत्तर से दक्षिण तक इसका विस्तार लगभग 3,214 किमी और पूर्व से पश्चिम तक इसका विस्तार लगभग 2933 किमी है, दोनों के बीच का अंतर केवल 281 किमी है।**

1. **भारत की स्थलीय सीमा**

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कुल स्थलीय सीमा 15, 200 किमी है जो दलदली भूमि, रेगिस्तान, मैदानों, बीहड़ पहाड़ों, बर्फ से ढके क्षेत्रों, और घने वनों से होकर गुजरती है। स्थलीय सीमा उच्च हिमालय पर्वत द्वारा प्रदान की जाती है, जो विश्व की सबसे ऊँची पर्वतमाला हैं।

- **हिमालय श्रृंखला भारत और चीन के बीच एक प्राकृतिक सीमा बनाता है। उत्तर-पश्चिम में, जम्मू और कश्मीर चीन में सिंकियांग और तिब्बत के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है।**
- **पूर्व में, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र तिब्बत के साथ एक साझा सीमा है।**
- **नेपाल की सीमा उत्तर प्रदेश और बिहार से मिलती है।**
- **पश्चिम बंगाल और सिक्किम भी छोटी दूरी के लिए नेपाल की सीमा से मिलती हैं।**
- **भारत-अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान-अफगानिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमा को डूरंड रेखा कहा जाता है, जिसे ब्रिटिश भारत और अफगानिस्तान के बीच 'सैन्य-रणनीतिक सीमा' के रूप में निर्धारित किया गया था।**
- **पाकिस्तान और बांग्लादेश (पूर्वी पाकिस्तान) के बीच की सीमा को 1947 में 'रेडक्लिफ पंचाट' के माध्यम से विभाजन के समय अंतिम रूप दिया गया था।**

- पंजाब में, सीमा एक समतल एवं उपजाऊ मैदान के माध्यम से गुजरती है, जो विशुद्ध रूप से मानव निर्मित है। कश्मीर में पाकिस्तान के साथ भारतीय सीमा अभी भी विवादित है और 1947 में विभाजन के बाद से दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण संबंध हैं।
- भारत की पूर्वी सीमा हिमालयी की शाखाओं की एक जटिल श्रृंखला से निर्मित होती है, जिसमें मिश्मी, पटकाई, नागा पहाड़ियाँ, बरेल पर्वतमाला, मिजो पहाड़ियों और अंत में अराकान योमा पर्वत श्रृंखला शामिल हैं।
- अराकान योमा पर्याप्त विस्तार के साथ बंगाल की खाड़ी में जलमग्न है तथा पुनः अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के रूप में उभरा हुआ है।
- भारत और बांग्लादेश के बीच की सीमा रेखा विशाल गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा को पार करती है। यह सीमा पूरी तरह से समतल देश से होकर गुजरती है जिसमें एक छोटा सा पर्वत या पहाड़ी भी नहीं है जिसका उपयोग दो देशों के बीच सीमा के सीमांकन के लिए किया जा सकता है। बांग्लादेश और भारत असम, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय और पश्चिम बंगाल सहित विश्व की पांचवीं सबसे लंबी सथालीय सीमा साझा करते हैं।
- मुख्य भू-भाग के साथ 6100 किलोमीटर की समुद्री सीमा है जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के समुद्र तटों को जोड़ देने पर बढ़कर 7156 किमी तक हो जाती है।
- समुद्र के पार दक्षिण में निकटतम पड़ोसी श्रीलंका है, जो पाक जलसन्धि की संकीर्ण चैनल के माध्यम से भारत से अलग होता है।
- इसी तरह, आठ डिग्री चैनल लक्षद्वीप तथा मालदीव द्वीपों के बीच की सीमा बनाता है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, भारत की स्थलीय की लम्बाई 15,106.7 किलोमीटर है और जलीय सीमा की लम्बाई 7,516.6 किलोमीटर है जिसमें द्वीप प्रदेश की सीमा भी शामिल हैं। तालिका में साझा किया गया डेटा भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अनुसार है। [यहाँ क्लिक करें]

देश का नाम	लम्बाई किमी में
बांग्लादेश	4,096.7
चीन	3,488
पाकिस्तान	3,323
नेपाल	1,751
म्यांमार	1,643
भूटान	699
अफ़ग़ानिस्तान	106
कुल	15,106.7

वे राज्य जिनकी साझा सीमा पड़ोसी देशों के साथ है।

देश	राज्य
पाकिस्तान	4 राज्य: जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात
अफ़ग़ानिस्तान	1 राज्य: जम्मू और कश्मीर
चीन	5 राज्य: जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल	5 राज्य: उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान	4 राज्य: सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
म्यांमार	4 राज्य: अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम
बांग्लादेश	5 राज्य: पश्चिम बंगाल, मेघालय, असम, त्रिपुरा और मिजोरम

राज्यों पर एक दृष्टि क्षेत्र-वार:

राज्य	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	राजधानी	मुख्य भाषा
राजस्थान	342,239	जयपुर	राजस्थानी, हिंदी
मध्य प्रदेश	308,245	भोपाल	हिंदी
महाराष्ट्र	307,713	मुंबई	मराठी
उत्तर प्रदेश	240,928	लखनऊ	हिंदी
गुजरात	196,024	गांधीनगर	गुजराती
कर्नाटक	191,791	बेंगलुरु	कन्नड़
आंध्र प्रदेश	162,968	हैदराबाद	तेलुगू
ओडिशा	155,707	भुबनेश्वर	उड़िया
छत्तीसगढ़	135,191	रायपुर	हिंदी
तमिलनाडु	130,058	चेन्नई	तामिल
तेलंगाना	112,077	हैदराबाद	तेलुगू

बिहार	94,163	पटना	हिंदी
पश्चिम बंगाल	88,752	कोलकाता	बंगाली
अरुणाचल प्रदेश	83,743	ईटानगर	जनजातीय
झारखंड	79,714	रांची	हिंदी
असम	78,438	दिसपुर	असमिया
हिमाचल प्रदेश	55,673	शिमला	हिंदी
उत्तराखंड	53,483	देहरादून	हिंदी
पंजाब	50,362	चंडीगढ़	पंजाबी
हरियाणा	44,212	चंडीगढ़	हिंदी
केरल	38,863	तिरुवनंतपुरम	मलयालम
मेघालय	22,429	शिलांग	खासी, गारो, अंग्रेजी
मणिपुर	22,327	इंफाल	मणिपुरी

मिजोरम	21,081	आइजोल	मिजो, अंग्रेजी
नगालैंड	16,579	कोहिमा	अंगामी ए.ओ.
त्रिपुरा	10,486	अगरतला	बंगाली, त्रिपुरी
सिक्किम	7,096	गंगटोक	लेप्चा, भूटिया
गोवा	3,702	पणजी	मराठी, कोंकणी
केंद्र शासित प्रदेश	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	राजधानी	भाषा: हिन्दी
अंडमान और निकोबार है।	8,249	पोर्ट ब्लेयर	अंडमानी, निकोबारी
दिल्ली	1,490	नई दिल्ली	हिंदी
पुडुचेरी	492	पुडुचेरी	तमिल, फ्रेंच
दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव	603	दमन	गुजराती, मराठी

चंडीगढ़	114	चंडीगढ़ अपने आप में दो राज्यों यानि पंजाब और हरियाणा की राजधानी है।	हिंदी, पंजाबी और हरियाणवी
लक्षद्वीप	32	कावरती	मलयालम
जम्मू-कश्मीर	-	श्रीनगर (ग्रीष्मकालीन राजधानी) जम्मू (शीतकालीन राजधानी)	कश्मीरी, उर्दू
लद्दाख	-	लेह, कारगिल	उर्दू, हिंदी, अंग्रेजी

भारत की भौगोलिक स्थितिः हिमालय और उत्तरी मैदान

- भारत की प्राकृतिक विशेषताओं में व्यापक विविधता है।
- स्थलखंड की यह विविधता विभिन्न भूगर्भीय काल के दौरान निर्मित भारत के बड़े स्थलखंड और क्रस्ट में होने वाली विभिन्न भूगर्भीय और भू-आकृति विज्ञान प्रक्रियाओं का परिणाम है।
- प्लेट विवर्तनिकी (टेक्टोनिक) सिद्धांत के अनुसार, भारतीय परिदृश्य की भौतिक विशेषताओं के निर्माण में शामिल प्रमुख प्रक्रियाएं फोल्डिंग , फॉल्टिंग और ज्वालामुखीय गतिविधि हैं। उदाहरण

के लिए: देश के उत्तर में हिमालय के निर्माण के लिए गोंडवाना भूमि के साथ यूरेशियन प्लेट के सम्मिलन को जिम्मेदार ठहराया गया।

- देश के उत्तरी भाग में ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृतियों का विस्तार है जिसमें विभिन्न चोटी, विशाल घाटियों और गहरी घाटियों के साथ पर्वत श्रृंखलाओं की एक विस्तुत श्रृंखला शामिल है।
- देश के दक्षिणी भाग में अत्यधिक विच्छेदन वाले पठार, निरावरण चट्टानें और सीधी ढ़लानों की विकसित श्रृंखला के साथ स्थाई पहाड़ी मैदान भूमि होती है।
- उत्तर के विशाल मैदान इन दो परिदृश्यों के बीच स्थित है।
- भारत की प्राकृतिक विशेषताओं को निम्नलिखित भौगोलिक प्रभागों के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. हिमालय
2. उत्तर के मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय मरुस्थल
5. तटीय मैदान
6. द्वीप

(मानचित्र: भारत की विभिन्न प्राकृतिक विशेषताएं)

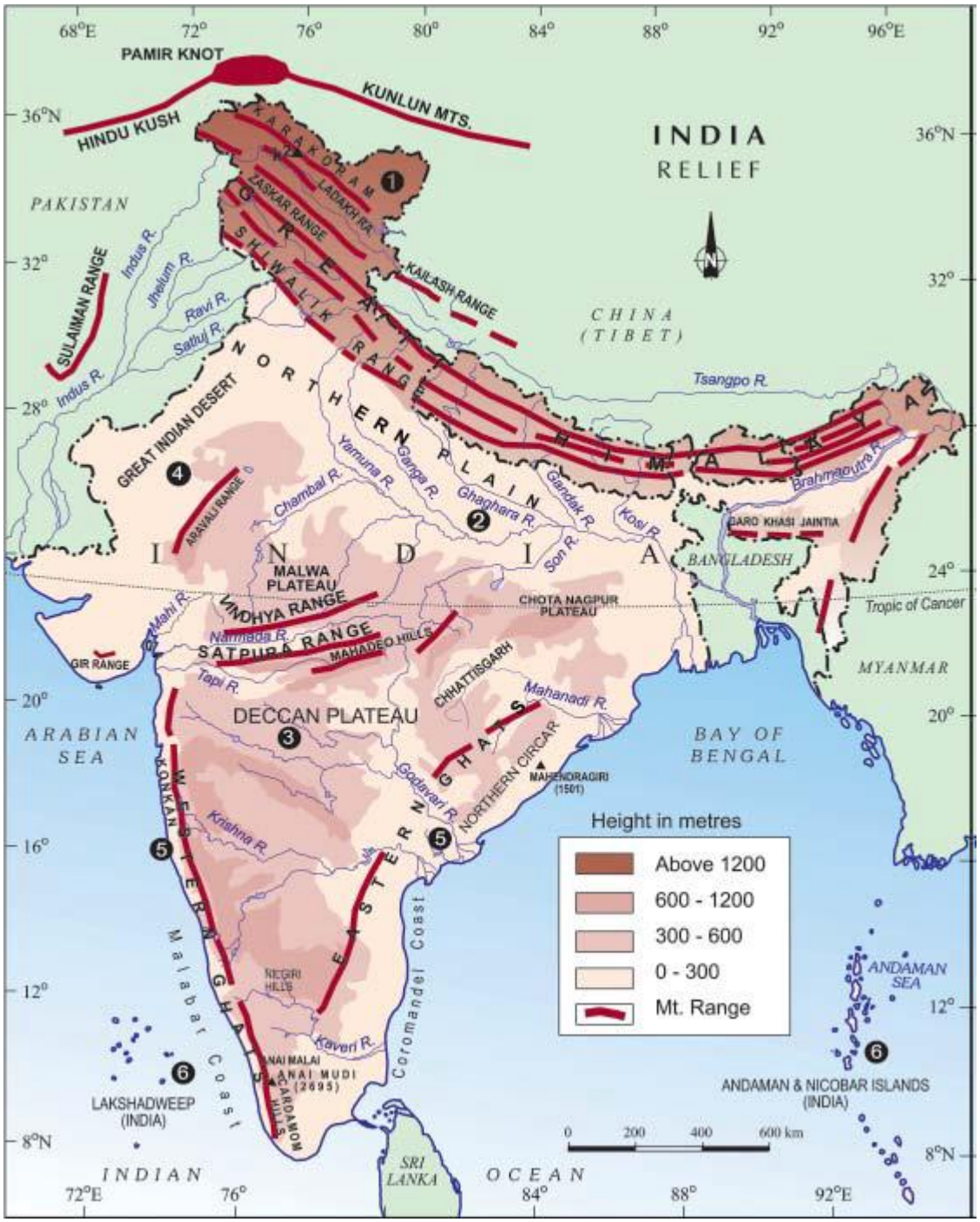

हिमालय

- हिमालय वलित पर्वत हैं जो देश की उत्तरी सीमा का निर्माण करता है।

- हिमालय दो रेखाओं के आधार पर विभाजित है: एक देशांतरीय विभाजन है और दूसरा पश्चिम से पूर्व तक है।
- हिमालय में समांतर पर्वत श्रृंखलाओं की श्रृंखला शामिल है।
- हिमालय एक चाप बनाता है, जिसमें लगभग 2400 किमी की दूरी शामिल है और चौड़ाई पश्चिम में 400 किमी से पूर्व में 150 किमी तक भिन्न है।
- पश्चिमी भाग की तुलना में पूर्वी भाग में ऊंचाई संबंधी भिन्नताएं अधिक हैं।
- अनुदैर्ध्य सीमा के आधार पर हिमालय में तीन समानांतर चोटी हैं: महान हिमालय या आंतरिक हिमालय या हिमाद्री; हिमाचल या लघु हिमालय और बाह्य या शिवालिक हिमालय।
- महान हिमालय सबसे अविरत पर्वतमाला हैं जिनमें 6000 मीटर की औसत ऊंचाई वाले सबसे उच्च शिखर होते हैं।
- महान हिमालय की परत की प्रकृति असममित हैं।
- इस हिमालय के मुख्य भाग में ग्रेनाइट पाए जाते हैं।
- इन श्रेणियों का सामान्य अभिविन्यास उत्तर-पश्चिमी भाग में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण पूर्व दिशा तक; पूर्व-पश्चिम दिशा में दार्जिलिंग और सिक्किम तक और अरुणाचल क्षेत्र में दक्षिण पश्चिम से पूर्वोत्तर तक है।
- हिमाचल या लघु हिमालय मुख्य रूप से अत्यधिक संकुचित और परिवर्तित चट्टानों से बना है।
- इस प्रणाली की सबसे लंबी श्रृंखला पीरपंजल श्रेणी है।
- इस श्रेणी में कश्मीर की प्रसिद्ध घाटी, कंगड़ा और कुल्लू घाटी शामिल है।
- हिमालय की बाह्य श्रृंखलाओं को शिवालिक कहा जाता है। यह दूर उत्तर में स्थित मुख्य हिमालय पर्वत श्रेणी से नदियों द्वारा लाए गए असमेकित अवसादों से निर्मित है।

- लघु हिमालय और शिवालिक के बीच स्थित अनुदैर्ध्य घाटी दून के नाम से जानी जाती है। उदाहरण: देहरा दून, कोटली दून, पाटली दून।
- हिमालय का सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट है, नेपाल (8848 मीटर); कंचनजंगा, भारत (8598 मीटर); मकालू, नेपाल (8481 मीटर)
- सुविधा के आधार पर, हिमालय की श्रेणियों और अन्य भू-आकृति विज्ञान विशेषताओं को निम्नलिखित में उप-विभाजित किया जा सकता है
- उत्तर-पश्चिम या कश्मीर हिमालय
- हिमाचल और उत्तराखंड हिमालय
- दार्जिलिंग और सिक्किम हिमालय
- अरुणाचल हिमालय
- पूर्वी पहाड़ियां और पर्वत

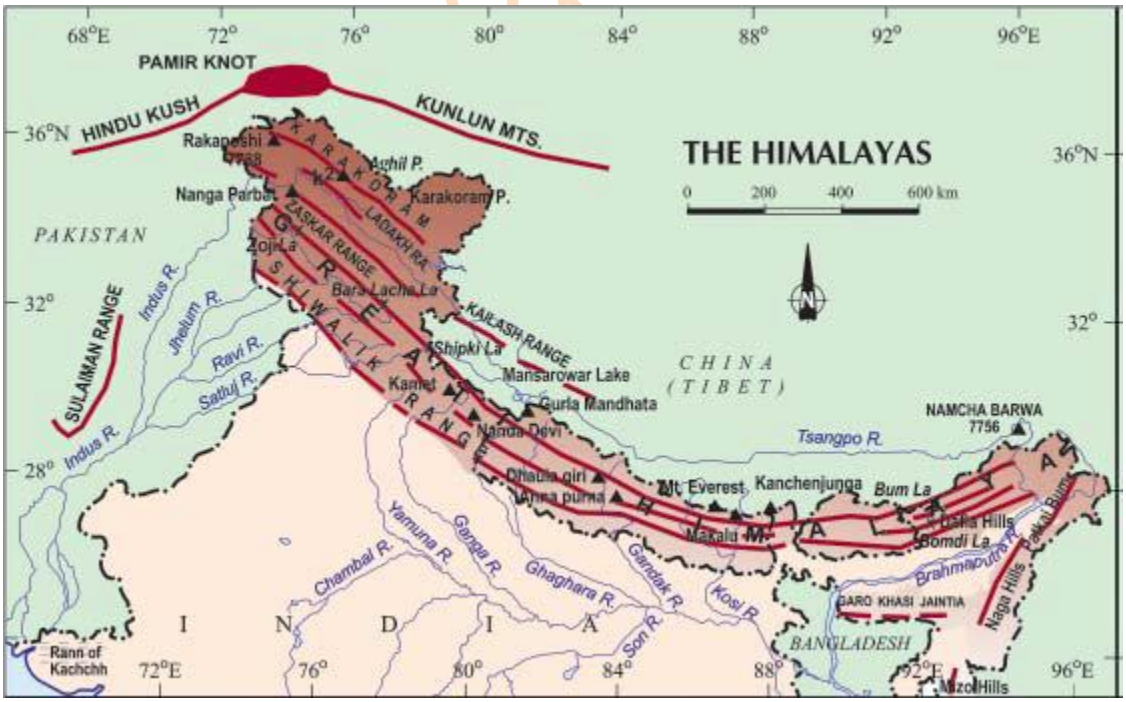

उत्तर-पश्चिमी या कश्मीर हिमालय

- महत्वपूर्ण पर्वत श्रेणियां: कराकोरम, लद्दाख, जस्कर और पीरपंजल
- महत्वपूर्ण ग्लेशियर: सियाचिन, बाल्टोरो, रेमो, आदि
- महत्वपूर्ण दर्रे: ज़ोजिला, बारालाचा ला, बनिहाल, रोहतंग, आदि
- महत्वपूर्ण चोटियों: नंगा पर्वत, के-2, आदि
- कश्मीर घाटी: महान हिमालय और पीरपंजल पर्वत श्रेणी के बीच स्थित है।
- शीत मरुस्थल: महान हिमालय और कराकोरम पर्वत श्रेणी के बीच।
- महत्वपूर्ण झील: दल और वुलर मीठे पानी के झील हैं, जबकि पैंगॉग त्सो और त्सो मोरिरी खारे पानी की झील हैं।
- इस क्षेत्र के दक्षिणी भाग में अनुदैर्ध्य घाटियां हैं जिन्हें दून के नाम से जाना जाता है। उदाहरण: जम्मू दून, पठानकोट दून, आदि,

हिमाचल और उत्तराखंड हिमालय

- महत्वपूर्ण पर्वत श्रेणियां: महान हिमालय, धौलाधर, शिवालिक, नागतिभा, आदि,
- महत्वपूर्ण नदी व्यवस्था: सिंधु और गंगा
- महत्वपूर्ण पर्वतीय स्थल: धर्मशाला, मसूरी, शिमला, काओसानी, आदि,
- महत्वपूर्ण दर्रे: शिपकी ला, लिपुलेख, माना दर्रा, आदि,
- महत्वपूर्ण ग्लेशियर: गंगोत्री, यमुनोत्री, पिंडारी, आदि,
- महत्वपूर्ण चोटियां: नंदा देवी, धौलागिरी, आदि,

- महत्वपूर्ण दून: देहरा दून (सबसे बड़ा), हरिके दून, कोटा दून, नालागढ़ दून, चंडीगढ़-कालका दून इत्यादि।
- यह क्षेत्र पांच प्रयाग (नदी संगम) के लिए जाना जाता है। फूलों की घाटी भी इसी क्षेत्र में स्थित है।

दार्जिलिंग और सिक्किम हिमालय

- यह पश्चिम में नेपाल हिमालय और पूर्व में भूटान हिमालय के बीच स्थित है।
- यह तेज बहने वाली नदियों और ऊंची पर्वत चोटियों का क्षेत्र है।
- महत्वपूर्ण चोटियां: कंचनजंगा
- इस क्षेत्र में दुआर संरचनाएं शिवालिक (अनुपस्थित) की जगह लेती हैं जो चाय बागानों के विकास को बढ़ाती है।
- महत्वपूर्ण ग्लेशियर: ज़ेमु ग्लेशियर
- महत्वपूर्ण चोटी: नाथू ला और जेलेप ला

अरुणाचल हिमालय

- यह पूर्व में भूटान हिमालय और दीफू दर्रे के बीच स्थित है
- महत्वपूर्ण चोटियां: नामचा बरवा और कांग्टू
- महत्वपूर्ण नदियां: सुबनसिरी, दिहांग, दिबांग और लोहित
- महत्वपूर्ण पर्वत श्रेणियां: मिश्मी, अबोर, दफला, मिहिर इत्यादि।
- महत्वपूर्ण दर्रे: दिफू दर्रा,

पूर्वी पहाड़ियां और पर्वत

- ये हिमालय पर्वत का भाग है जो उत्तर से दक्षिण दिशा तक सामान्य संरेखण में हैं।
- देश की पूर्वी सीमा में हिमालय को पूर्वांचल कहा जाता है। ये मुख्य रूप से बलुआ पत्थर (अवसादी चट्टानों) से निर्मित है।
- महत्वपूर्ण पहाड़ियां: पटकाई बम, नागा पहाड़ियां, मणिपुर पहाड़ियां, मिजो पहाड़ियां, आदि

उत्तरी मैदान

- उत्तरी मैदान तीन प्रमुख नदी व्यवस्थाओं - सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र की अन्योन्य क्रिया द्वारा निर्मित है।
- यह मैदान जलोढ़ मृदा का निर्माण करता है - लाखों वर्षों से हिमालय की तलहटी पर स्थित एक विशाल नदी घाटी में जलोढ़क का निक्षेप।
- यह देश का घनी आबादी वाला और कृषि रूप से बहुत ही उत्पादक भौगोलिक भाग है।
- सुविधाओं में भिन्नता के अनुसार, उत्तरी मैदान को चार क्षेत्रों (उत्तर से दक्षिण तक) - भाबर, तराई, भांगर और खादर में विभाजित किया जा सकता है।
- भाबर ढलान के टूटने पर शिवालिक तलहटी के समानांतर 8-10 किमी के बीच एक संकीर्ण क्षेत्र है। नदी पर्वत से निकलने के बाद एक संकीर्ण क्षेत्र में कंकड़ जमा करती है। इस क्षेत्र में सभी धाराएं लुप्त हो जाती हैं।
- भाबर क्षेत्र के दक्षिण स्थित तराई क्षेत्र में, धाराएं और नदियां फिर से उभरती हैं और एक नम, दलदली और कीचड़ वाले क्षेत्र का निर्माण करती हैं, जो वन्यजीवन से परिपूर्ण सघन वन क्षेत्र के रूप में जाने जाते हैं।

- भांगर क्षेत्र तराई क्षेत्र के दक्षिण में स्थित है। यह क्षेत्र पुराने जलोढ़क द्वारा निर्मित होता है। इस क्षेत्र की मिट्टी में स्थानीय रूप से कंकड़ के रूप में जाना जाने वाला खटीमय (calcareous) जमा होता है।
- नए जलोढ़क वाले क्षेत्र को खादर के रूप में जाना जाता है। ये लगभग हर साल नवीनीकृत होते हैं और इतने उपजाऊ होते हैं कि सघन कृषि के लिए आदर्श होते हैं।
- नदीय (Riverine) द्वीप समूह - ये वह द्वीप हैं जो नदियों के भ्रंश के कारण विशेष रूप से निचले स्तर पर मंद ढलान और नदियों की गति में परिणामी कमी के कारण बनते हैं। माजुली - ब्रह्मपुत्र में दुनिया का सबसे बड़ा आवासीय नदीय द्वीप है।
- सहायक नदियां - निचले जलमार्ग में नदियां तलछट के जमाव के कारण कई चैनलों में विभाजित हो जाती हैं इन्हें सहायक नदियां कहा जाता है।
- दोआब - वह क्षेत्र जो दो नदियों के संगम के पीछे स्थित होता है।

भारत में महत्वपूर्ण पर्वत चोटियां	**विवरण**
गॉडविन ऑस्टिन (K2)	पी.ओ.के में कराकोरम पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर
नंगा पर्वत	जम्मू और कश्मीर
नंदा देवी	उत्तराखंड, भारत का दूसरा सबसे ऊंचा पर्वत और देश के अंदर सबसे ऊंचा

byjusexa

कंचनजंगा	नेपाल और सिक्किम (पूर्व में तीस्ता नदी और पश्चिम में तैमूर नदी के बीच), भारत में सबसे ऊंचा पर्वत और दुनिया का तीसरा सबसे ऊंचा पर्वत
नोकरेक	गारो पहाड़ी (मेघालय) का उच्चतम बिंदु
गुरुशिखर	माउंट अबू, राजस्थान, अरावली पहाड़ी का उच्चतम बिंदु
कुदरेमुख	कर्नाटक
डोडाबेट्टा	उधागमंडलम (नीलगिरी की पहाड़ी) के पास, तमिलनाडु में उच्चतम बिंदु केवल अनाइमुड़ी के बाद पश्चिमी घाट में दूसरी सबसे ऊंची चोटी
अनाइमुडी	केरल में स्थित, यह पश्चिमी घाटों और दक्षिण भारत में सबसे ऊंची चोटी है
अगस्थ्यमलाई	पश्चिमी घाट के सुदूर दक्षिणी छोर पर स्थित, केरल और तमिलनाडु में दोनों तरफ विस्तारित

byjusexamprep.com

सेडल चोटी	उत्तरी अंडमान में स्थित बंगाल की खाड़ी में द्वीपसमूह का सर्वोच्च बिंदु
माउंट हेरिएट	अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में तीसरी सबसे ऊंची चोटी, केवल सेडल चोटी (अंडमान की सबसे ऊंची) और माउंट थूलियर (निकोबार की सबसे ऊंची) के बाद
महेंद्रगिरी	उड़ीसा का सर्वोच्च पर्वत शिखर और पूर्वी घाट का दूसरा सबसे ऊंचा पर्वत शिखर।
अर्मा कोंडा	(आंध्र प्रदेश), पूर्वी घाट में सर्वोच्च चोटी

भारत में महत्वपूर्ण दर्रे

राज्य	दर्रा नाम	टिप्पणी
जम्मू-कश्मीर	बनिहाल दर्रे	जम्मू और श्रीनगर को
	चांग-ला	तिब्बत के साथ लद्दाख को
	पीर-पंजाल	जम्मू और कश्मीर घाटी के बीच

	ज़ोजिला दर्रा	करगिल और लेह एक तरफ व श्रीनगर दूसरी तरफ के बीच महत्वपूर्ण सड़क संपर्क
हिमाचल प्रदेश	बारा लाचा ला	जम्मू-कश्मीर के लेह को, हिमाचल प्रदेश की मंडी से
	रोहतांग दर्रे	कुल्लू, लाहौल एवं स्पीति घाटी के बीच सड़क संपर्क
	शिपकी ला दर्रा	हिमाचल प्रदेश और तिब्बत के बीच
उत्तराखंड	लिपू लेख	उत्तराखंड (भारत), तिब्बत (चीन) और नेपाल की सीमाओं की तिराहा
	नीति दर्रा	तिब्बत के साथ उत्तराखंड
सिक्किम	नाथू ला	तिब्बत के साथ सिक्किम
	जेलेप ला	सिक्किम-भूटान सीमा
अरुणाचल प्रदेश	बोम डि ला	भूटान के साथ अरुणाचल प्रदेश

byjusexamprep.com

	दिहांग दर्रा	अरुणाचल प्रदेश और म्यांमार

प्रायद्वीपीय पठार

- प्रायद्वीपीय पठार का निर्माण गोंडवाना भूखंड के टूटने और प्रवाह के कारण हुआ है और इसलिए यह सबसे प्राचीन भूखंड का भाग है। यह भारत में सबसे प्राचीन और स्थायी भूखंडों में से एक है।
- यह पुरानी क्रिस्टलीय, आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों से निर्मित पठार है।
- यह एक असमान त्रिभुजाकार संरचना है जोकि उत्तर-पश्चिम में दिल्ली पहाड़ियां, पूर्व में राजमहल पहाड़ियां, पश्चिम में गिर की पहाड़ियां, और दक्षिण में कार्डामम (इलायची) पहाड़ियों में फैली है।
- इस भूखंड की प्रमुख स्थलाकृतिक विशेषताएं हैं – ब्लॉक पर्वत, रिफ्ट घाटियां, स्कंध पर्वत, नग्न चट्टानी सरंचना, टीलेदार पहाड़ियों की श्रेणियां और दीवारनुमा क्वार्टज़ाइट डाइक्स हैं जो जल संग्रहण के लिए प्राकृतिक स्थान प्रदान करती हैं।
- क्रस्ट में दरार आने और उसके टूटने के कारण यह कई बार उत्थान और पतन की क्रिया से होकर गुजरा है।
- स्थलाकृतिक विशेषताओं के आधार पर प्रायद्वीपीय पठार को मुख्य तीन भागों में बांटा जा सकता है –
- दक्कन का पठार
- मध्य उच्च-भूमि
- उत्तर-पूर्वी पठार

दक्कन का पठार

- दक्कन का पठार एक त्रिभुजाकार भूखंड है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है।
- इसकी पश्चिमी सीमा पर पश्चिमी घाट, पूर्व दिशा में पूर्वी घाट और उत्तर तथा उत्तर-पूर्व दिशा में सतपुड़ा, मैकाले और महादेव की पहाड़ियां हैं।
- उत्तर-पूर्व दिशा में कर्बी-एंगलांग पठार और उत्तर साचर पहाड़ियों को प्रायद्वीपीय पठार के एक विस्तार के रूप में माना जाता है।
- पश्चिम में दक्कन के पठार की ऊंचाई अधिक है और पूर्व दिशा की ओर यह कम होती जाती है।
- पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट दक्कन पठार की प्रमुख श्रृंखलाएं हैं, इन दोनों के बीच के प्रमुख अंतर को निम्नलिखित तालिका में दिखाया गया हैः

क्रम	पश्चिमी घाट	पूर्वी घाट
1.	ये निरंतर हैं और केवल दर्रों के द्वारा ही पास किए जा सकते हैं।	ये निरंतर और समान नहीं हैं।
2.	औसत ऊंचाई – (900 – 1600 मीटर)	औसत ऊंचाई – 600 मीटर
3.	ऊंचाई उत्तर से दक्षिण की ओर घटती जाती है।	ऊंचाई का कोई सामान्य पैटर्न नहीं है।

byjusexamprep

4.	महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ – नीलगिरी, अन्नामलाई, कार्डामम, बाबुबुदन आदि।	महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ – जावेदी, पालकोंडा, नल्लामला, महेन्द्रगिरी आदि।
5.	महत्वपूर्ण चोटियां – अनैमुदी (सर्वोच्च), डोडाबेटा आदि।	महत्वपूर्ण चोटियां – महेन्द्रगिरी (सर्वोच्च), ऊटी, कोडकनाल आदि।
6.	अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों का जन्म यहां से हुआ है और यह पश्चिम और पूर्व में बहने वाली नदियों के मध्य जल विभाजक का कार्य करती है।	ये महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदी घाटियों द्वारा विभाजित है जो कि बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

मध्य उच्चभूमि

- मध्य उच्चभूमि नर्मदा नदी के उत्तर में प्रायद्वीपीय पठार का भाग है जिसमें उत्तर में मालवा का पठार, दक्षिण में विंध्य पर्वत श्रृंखला और उत्तर-पश्चिम में अरावली पहाड़ियों का विस्तार है।
- मध्य उच्चभूमि पश्चिम में विस्तृत (चौड़ी) और पूर्व में संकीर्ण (पतली) है।
- बुंदेलखंड, बघेलखंड, छोटानागपुर जैसे पठार मध्य उच्चभूमि के पूर्वी विस्तार का निर्माण करते हैं।
- पर्वतों की सामान्य ऊंचाई 700-1000 मीटर है और ढाल उत्तर और उत्तर-पूर्व दिशा में है।
- अपने भूगर्भिक इतिहास में यह क्षेत्र कई रूपांतरित प्रक्रियाओं से होकर गुजरा है जिसकी पुष्टि रूपांतरित चट्टानों जैसे मार्बल, स्लेट, नीस आदि की उपस्थिति से की जा सकती है।
- इस क्षेत्र में अधिकांश पर्वत श्रृंखलाएं अवशिष्ट पर्वतों के उदाहरणों हैं जो कि अत्यधिक उघड़ी हुई हैं और असतत श्रृंखलाओं का निर्माण करती हैं (उदाहरण: सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला)।

उत्तर-पूर्वी पठार

- इस क्षेत्र में कई पठार जैसे मेघालय पठार, कर्बी एंगलांग पठार आदि हैं।
- महत्वपूर्ण पहाड़ियां – खासी, गारो, जंयतिया आदि।

भारतीय मरुस्थल

- महान भारतीय मरूस्थल देश के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है।
- प्रमुख रेगिस्तानी विशेषताएं – मशरूम चट्टानें, विस्थापित टीले और ओएसिस हैं।
- यह क्षैतिज ड्यून्स और बारकन्स के साथ लहरदार स्थलाकृति भूमि है।
- इस क्षेत्र में अधिकांश नदियां क्षणिक हैं। उदाहरण: लूनी
- निम्न वर्षण और अधिक वाष्पीकरण इस क्षेत्र को जल न्यून क्षेत्र बनाता है।
- रेगिस्तान को दो भागों में बांटा जा सकता हैः सिंध की ओर ढलान वाला उत्तरी क्षेत्र और दक्षिण की ओर कच्छ का रन।

तटीय मैदान

- प्रायद्वीपीय पठार तीन दिशाओं से समुद्री जल से घिरा हैः दक्षिण में हिन्द महासागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर।
- देश की मुख्य भूमि की तटरेखा की लंबाई 6100 किलोमीटर है और देश की कुल भौगोलिक तटरेखा की लंबाई (द्वीपों सहित) 7517 किलोमीटर है।
- स्थिति और सक्रिय भौगोलिक रूपांतरण प्रक्रियाओं के आधार पर, इसे मुख्यत: दो भागों में बांटा जा सकता हैः पश्चिमी तटीय मैदान और पूर्वी तटीय मैदान।

द्वीप समूह

- देश की मुख्यभूमि के विस्तृत भौतिक प्रतिरूपों के अतिरिक्त, प्रायद्वीपीय पठार के दोनों भाग में दो प्रमुख द्वीप समूह स्थित हैं।
- द्वीप समूह मछली पकड़ने और बंदरगाह क्रियाओं के लिए अनुकूल स्थितियां प्रदान करते हैं।
- यद्यपि भारतीय सीमाक्षेत्र में 4000 से अधिक द्वीप हैं तथापि अंडमान और निकोबार तथा लक्षद्वीप समूह दो प्रमुख द्वीप समूह हैं।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

- दक्षिणी अंडमान और लिटिल अंडमान के मध्य डुंकन मार्ग स्थित है।
- महत्वपूर्ण चोटियां: सैडल पीक, उत्तरी अंडमान (738 मीटर), मांउट डिवोलो, मध्य अंडमान (515 मीटर), मांउट कोयोब, दक्षिणी अंडमान (460 मीटर), माउंट थुइलर, ग्रेट निकोबार (642 मीटर).

ध्यान दें

- दस डिग्री चैनल- लिटिल अंडमान और कार निकोबार के बीच
- डंकन पैसेज - ग्रेट अंडमान और लिटिल अंडमान के बीच

लक्षद्वीप समूह

- कविरत्ति द्वीप समूह लक्षद्वीप समूह का प्रशासनिक मुख्यालय है।
- इस समूह में मिनिकॉय सबसे बड़ा द्वीप है।
- इस द्वीप समूह में ज्वारीय तट हैं जो असंगठित कंकड़, शिंगल्स, कॉब्लस और बोल्डर्स से बना है।

- यह संपूर्ण द्वीप समूह दस डिग्री चैनल, उत्तर में अमिनी द्वीप और दक्षिण में कन्नूर द्वीप से विभाजित है।

ध्यान दें

- नौ डिग्री चैनल- मिनिकॉय को शेष लक्षद्वीप से अलग करता हैं
- आठ डिग्री चैनल- लक्षद्वीप समूह को मालदीव से अलग करता हैं

अन्य द्वीप समूह

- न्यूमोर द्वीप- गंगा के मुंह पर बंगाल की खाड़ी में स्थित है।
- पंबन द्वीप- श्रीलंका और भारत के बीच मैनर की खाड़ी में स्थित है।

भारत में अपवाह तंत्र

भारत के अपवाह तंत्र को मुख्यत: निम्न रूपों में वर्गीकृत किया गया है:

1. हिमालयी नदी अपवाह तंत्र
2. प्रायद्वीपीय नदी अपवाह तंत्र

हिमालय और भारत के प्रायद्वीपीय नदियों के बीच तुलना

क्रमांक	पहलू	हिमालयी नदी	प्रायद्वीपीय नदी

1.	उद्गम का स्थान	ग्लेशियरों से ढ़के हिमालय पर्वत	प्रायद्वीपीय पठार और मध्य पर्वतीय क्षेत्र
2.	प्रवाह की प्रकृति	बारहमासी; ग्लेशियर से जल और वर्षा प्राप्त करते हैं	मौसमी; मानसून वर्षा पर निर्भर
3.	अपवाह का प्रकार	उत्तरगामी और अनुगामी मैदानों में वृक्षाकार प्रतिरूप का निर्माण करते हैं	परतदार, कायाकल्प के परिणामस्वरूप जालीदार, अरीय और आयताकार प्रतिरूप होते हैं
4.	नदी की प्रकृति	लंबे समय तक, शीर्ष के कटाव और नदी के अभिग्रहण का सामना करने वाले ऊंचे-नीचे पहाड़ों से होकर बहती है; मैदानों में दिशा का घुमाव और स्थानांतरण	अच्छी तरह से समायोजित घाटियों के साथ छोटी, निश्चित दिशा

5.	जलागम क्षेत्र	बहुत बड़ी नदी घाटी	अपेक्षाकृत छोटी नदी घाटी
6.	नदी की अवस्था	युवा और अल्पवयस्क, सक्रिय और घाटियों में गहरी	क्रमिक रूप-रेखा के साथ पुरानी नदियां, और लगभग अपने आधार स्तर तक पहुंच गई हैं

भारत की महत्वपूर्ण नदियाँ

हिमालयी नदियों का उद्गम हिमालय पर्वत से होता हैं और ये उत्तरी भारत के मैदान से होकर प्रवाहित होती हैं।

हिमालय की प्रमुख नदी प्रणालियाँ हैं:

- सिंधु नदी प्रणाली
- गंगा नदी प्रणाली
- यमुना नदी प्रणाली
- ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली

प्रायद्वीपीय नदी प्रणाली या प्रायद्वीपीय अपवाह का मुख्य स्रोत पश्चिमी घाट है, क्योंकि पश्चिमी घाट 'जल विभाजन' का कार्य करता है, ये नदियाँ या तो पूर्व की ओर बंगाल की खाड़ी में या पश्चिम की ओर अरब सागर में सम्मिलित हो जाती हैं। प्रायद्वीपीय नदियाँ ऐसी नदियाँ हैं जो केवल वर्षा पर आधारित हैं

प्रायद्वीप की प्रमुख नदियाँ हैं:

- महानदी
- गोदावरी
- कृष्णा
- कावेरी

ये नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं क्योंकि ये पठार की पूर्व दिशा में प्रवाहित होती हैं और उसके मुख पर 'डेल्टा' का निर्माण करती हैं; जबकि नर्मदा एवं ताप्ती नदियाँ पश्चिम दिशा में प्रवाहित होकर अरब सागर में गिरती हैं और 'मुहाना' का निर्माण करती हैं।

ये हिमनद नहीं, बल्कि वर्षा आधारित नदियाँ हैं। गर्मियों के दौरान, इन नदियों में जल का स्तर काफी कम हो जाता है या सूख जाती हैं।

हिमालयी नदियाँ

सिंधु नदी प्रणाली

हिंदू पौराणिक ग्रंथों में, सिंधु नदी का उल्लेख किया गया है। यह नदी तिब्बत के समीप मानसरोवर झील से निकलती है। जम्मू एवं कश्मीर से होते हुए यह भारत में पश्चिम की ओर बहती है, हिमाचल प्रदेश, पंजाब से होकर प्रवाहित होते हुए पाकिस्तान तक जाती है।

यह पश्चिम दिशा में बहते हुए कराची के पास अरब सागर में गिरती है। सिंधु पाकिस्तान की राष्ट्रीय एवं सबसे बड़ी नदी है। इसकी सहायक नदियाँ भारत में- ज़ांस्कर, नुब्रा, श्योक है और पाकिस्तान में हुंजा, सतलज, रवि, ब्यास, चिनाब और झेलम हैं। अतः इन नदियों के आधार पर ही पंजाब राज्य का नाम रखा गया है।

byjusexamprep.com

गंगा नदी प्रणाली

गंगा नदी प्रणाली भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है। इसकी उत्पत्ति गंगोत्री हिमनद में होती है। अपस्ट्रीम भागीरथी, देवप्रयाग में अन्य धारा अर्थात अलकनंदा से मिलती है, जहाँ गंगा नदी का निर्माण होता है। गंगा के दोनों किनारों पर सहायक नदियाँ हैं; यमुना और सोन इसकी दाईं ओर की सहायक नदी हैं।

बाएं तट की कुछ सहायक नदियाँ गोमती, घाघरा, गंडक, कोसी हैं। गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से होकर बहती है। अंत में यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

यमुना नदी प्रणाली

यमुना उत्तरी भारत की प्रमुख नदी प्रणाली है। यह नदी यमुनोत्री से प्रकट होकर उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और हरियाणा से होकर बहती है। यह दिल्ली, मथुरा, आगरा को पार करती है और चंबल, बेतवा और केन नदियों से मिलकर अंतिम रूप से प्रयागराज में गंगा में मिलती है। टोंस, चंबल, हिंडन, बेतवा और केन यमुना की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली

भारत की प्रमुख नदियों में से एक, ब्रह्मपुत्र, तिब्बत के हिमालयी अंगसी हिमनद में उत्पन्न होती है। इसे वहां त्सांगपो नदी कहा जाता है। भारत में यह अरुणाचल प्रदेश से प्रवेश करती है और इसे दिहांग नदी के रूप में जाना जाता है।

दिबांग, लोहित, केनुला इसकी सहायक नदियाँ हैं और असम से बहते (सर्वाधिक मार्ग) हुए, बांग्लादेश में प्रवेश करती है और अंतिम रूप से बंगाल की खाड़ी में गिरती है। ब्रह्मपुत्र में भारत की सभी नदियों की तुलना में जल की सर्वाधिक मात्रा मौजूद है।

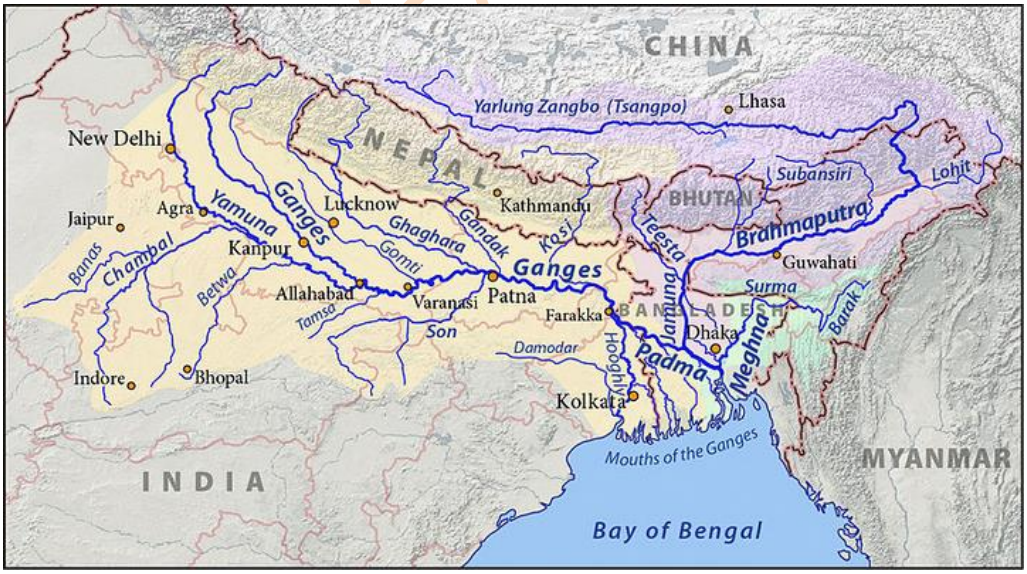

प्रायद्वीपीय नदियाँ

महानदी

पूर्व-मध्य भारत में महानदी एक महत्वपूर्ण नदी है। यह छत्तीसगढ़ के सिहावा पहाड़ियों से निकलती है और उड़ीसा राज्य (ओडिशा) से होकर बहती है। यह नदी किसी अन्य नदी की तुलना में भारतीय उपमहाद्वीप में अधिक गाद जमा करती है। महानदी संबलपुर, कटक और बांकी शहरों से होकर गुजरती है।

गोदावरी

गोदावरी नदी, गंगा के बाद, भारत की दूसरी सबसे लंबी नदी है। यह नदी महाराष्ट्र में त्रयंबकेश्वर से निकलती है और महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उड़ीसा (ओडिशा), तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और पुदुचेरी से होते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती है, इसकी सहायक नदियां प्रवर, इंद्रावती, मनेर साबरी आदि है। लंबे मार्ग तय करने के कारण इसे दक्षिण की गंगा के रूप में भी जाना जाता है।

कृष्णा नदी

कृष्णा भारत की तीसरी सबसे लंबी नदी है, जो लगभग 1300 किमी लंबी है। यह महाराष्ट्र के महाबलेश्वर क्षेत्र से निकलती है और कर्नाटक, तेलंगाना, और आंध्र प्रदेश से होते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

कावेरी नदी

कावेरी दक्षिण भारत की एक महत्वपूर्ण नदी है और इसका उद्गम स्थल कर्नाटक के कोगडू में है।

हेमवती, मोयारी, शिमशा, अर्कवती, होन्नुहोल, काबिनी, भवानी, नॉयल और अमरावती जैसी कई सहायक नदियाँ इसमें शामिल होती हैं।

नर्मदा और ताप्ती

नर्मदा और ताप्ती नदी अरब सागर में गिरने वाली प्रमुख नदियाँ हैं। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से होकर प्रवाहित होने वाली नर्मदा की लंबाई 1312 किलोमीटर है। अमरकंटक मध्य प्रदेश के शहडोल में नर्मदा का उद्गम स्थल है। नर्मदा मध्य भारत में पूर्व से पश्चिम की ओर बहते हुए अरब सागर में गिरती है।

दक्षिण भारत में ताप्ती नदी का प्रवाह नर्मदा के समान है, जो महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों से प्रवाहित होते हुए खंबात की खाड़ी में गिरती है। पूर्णा, गिरना और पंजरा इसकी तीन प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

अधिकांश प्राचीन धर्मों की तरह, नदियों को हिंदू धर्म और इसकी पौराणिक कथाओं में पवित्र माना जाता है। गंगा, यमुना (गंगा की सहायक नदी), ब्रह्मपुत्र, महानदी, नर्मदा, गोदावरी, तापी, कृष्णा और कावेरी नौ प्रमुख भारतीय नदियाँ हैं। हालाँकि सिंधु नदी भी भारत की एक प्रमुख नदी है।

भारतीय नदी प्रणाली में आठ प्रमुख नदियाँ (विभिन्न सहायक नदियों के साथ) हैं। जिनमें से अधिकांश नदियाँ बंगाल की खाड़ी में अपने जल का स्त्राव करती हैं; फिर भी, ऐसी कई नदियाँ हैं, जो पश्चिम की ओर प्रवाहित होते हुए अरब सागर में गिरती हैं।

अरावली पर्वतमाला का उत्तरी भाग, लद्दाख और बंजर थार के मरुस्थलीय क्षेत्र में अंतर्देशीय जल निकासी मौजूद है।

भारत की नदी प्रणालियाँ

नाम	**नदी की लंबाई**	**उद्गम स्थल**	**क्षेत्र**	**समापन**
सिंधु	3180/1114 किमी भारत में	तिब्बत में कैलाश पर्वत के उत्तरी ढलान से	भारत और पाकिस्तान	अरब सागर
गंगा (भागीरथी)	2525	उत्तराखंड में गंगोत्री	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल	बंगाल की खाड़ी
यमुना (जमुना)	1376	गढ़वाल में यमुनोत्री	दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश	बंगाल की खाड़ी
ब्रह्मपुत्र	916- भारत में	एंगसी हिमनद	असम, अरुणाचल प्रदेश	बंगाल की खाड़ी
कावेरी	765	ब्रह्मगिरी पहाड़ियाँ कोगडू, कर्नाटक	कर्नाटक और तमिलनाडु	बंगाल की खाड़ी
गोदावरी (दक्षिण भारत की गंगा)	1465	महाराष्ट्र में त्र्यंबकेश्वर	आंध्र प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में	बंगाल की खाड़ी

byjusexamprep.com

कृष्णा	1400	महाबलेश्वर	महाराष्ट्र औरआंध्र प्रदेश	बंगाल की खाड़ी
नर्मदा	1312	मध्य प्रदेश में अमरकंटक	मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र	अरब सागर
ताप्ती	724	मध्य प्रदेश का के सतपुड़ा क्षेत्र का बैतूल जिला	मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र	अरब सागर
महानदी	858	सिहावा पहाड़, छत्तीसगढ़	झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा (उड़ीसा)	बंगाल की खाड़ी
वैगई	258	वरुशनाडू पहाड़ियां	तमिलनाडु	बंगाल की खाड़ी
पेरियार	244	सुंदरमाला की शिवगिरी पहाड़ियां, तमिलनाडु	तमिलनाडु और केरल	बंगाल की खाड़ी

भारत में महत्वपूर्ण बांध

बांधों के बारे में कुछ तथ्य

- दुनिया में सबसे ऊँचा बांध - न्यूरक बांध (ताजिकिस्तान)
- दुनिया का सबसे लंबा बांध- हीराकुंड बांध (उड़ीसा)
- भारत में सबसे लंबा बांध- हीराकुंड बांध (उड़ीसा)
- भारत में उच्चतम बांध - तेहरी बांध (उत्तराखंड)

- भारत में उच्चतम सीधा गुरुत्वाकर्षण बांध - भाखड़ा बांध
- भारत का पहला बांध - कावेरी नदी (तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु) पर कलानै बांध (बड़ा एनिकट)

भारत में महत्वपूर्ण बांध

राज्य	बांध	नदी
आंध्र प्रदेश	नागार्जुन सागर बांध	कृष्णा
	पोलावरम प्रोजेक्ट	गोदावरी
	श्रीसैलम बांध	कृष्णा
अरुणाचल प्रदेश	रंगनाथी बांध	रंगनाथी नदी, ब्रह्मपुत्र नदी की एक सहायक नदी
छत्तीसगढ़	मिनिमटा (हस्देओ) बंगो बाँध	हसदेव
	दुधावा बाँध	महानदी

गुजरात	उकाई बांध	तापती
	सरदार सरोवर बांध	नर्मदा
हिमाचल प्रदेश	पोंग बांध	ब्यास
	भाखड़ा बांध	सतलुज
जम्मू और कश्मीर	बागलिहार बांध	चिनाब
	उरी बाम	झेलम
	किसानगंगा बांध	किसानगंगा
झारखंड	पानचेत बांध	दामोदर
	उत्तरी कोएल	उत्तरी कोएल

कर्नाटक	कृष्णराजस्सर बांध	कावेरी
	तुंगभद्रा बांध	तुंगभद्रा
केरल	चेरुथोनी बांध	चेरुथोनी
	इडुक्की बांध	पेरियार
मध्य प्रदेश	बान सागर बांध	सोन
	गांधी सागर बांध	चंबल
	इंदिरा सागर बांध	नर्मदा
	ओमकारेश्वर बांध	नर्मदा
महाराष्ट्र	भाटसा बांध	भाटसा और चोरना

	कोयना बांध	कोयना
ओडिशा	हीराकुड बांध	महानदी
	इंद्रावती बांध	इंद्रावती
पंजाब	रंजीत सागर बांध	रावी
राजस्थान	जवाहर सागर बांध	चंबल
	राणा प्रताप सागर बांध	चंबल
तमिलनाडु	मेट्टूर बांध	कावेरी
तेलंगाना	नागार्जुन सागर बांध	कृष्णा (बांध का कुछ भाग तेलंगाना में है)
	श्रीसैलम बांध	कृष्णा (बांध का कुछ भाग तेलंगाना में है)

उत्तराखंड	रामगंगा बांध	रामगंगा
	टिहरी बांध	भागीरथी
उत्तर प्रदेश	रिहान्द बांध	रिहान्द

भारत में महत्वपूर्ण झीलें

- भारत में मीठे पानी की सबसे बड़ी झील – वुलर झील, जम्मू और कश्मीर
- भारत में खारे पानी की सबसे बड़ी झील - चिल्का झील, ओडिशा
- भारत में सबसे ऊंची झील (ऊंचाई) – चोलामु झील, सिक्किम
- भारत में सबसे लंबी झील – वेंबनाड़ झील, केरल
- भारत में सबसे बड़ी कृत्रिम झील – गोविंद वल्लभ पंत सागर (रिहंद बांध)

भारत की महत्वपूर्ण झीलें

क्रमांक	**नाम**	**राज्य**	**जिला**	**झील का प्रकार**	**तथ्य/विवरण**

1	पुलिकट झील	आंध्र प्रदेश	नेल्लोर	खारे पानी की झील	यह पुलिकट झील पक्षी अभयारण्य के चारों ओर फैली हुई है; सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र यहां स्थित है
2	कोलेरू झील	आंध्र प्रदेश	पश्चिम गोदावरी	मीठे पानी की झील	प्रवासी पक्षियों के लिए घर
3	नागार्जुन सागर	तेलंगाना	नालगोंडा	मीठे पानी की झील	कृत्रिम रूप से निर्मित; कृष्णा नदी
4	महाराणा प्रताप सागर	हिमाचल प्रदेश	कांगड़ा	मीठे पानी की झील	रामसर स्थल
5	पैंगोंग त्सो	जम्मू एवं कश्मीर	लद्दाख	एंडोरेक झील (खारा पानी)	भारत-चीन सीमा

6	वुलर झील	जम्मू एवं कश्मीर	बांदीपुरा	टेक्टोनिक झील (मीठा पानी)	भारत की मीठे पानी की सबसे बड़ी झील
7	त्सो मोरिरी	जम्मू एवं कश्मीर	लद्दाख	खारे पानी की झील	सबसे ऊंची झील
8	अष्टमुडीकायल झील	केरल	कोल्लम	खारे पानी की झील	रामसर आर्द्रभूमि स्थल
9	लोनार झील	महाराष्ट्र	बुलढाणा	ज्वालामुखीय (क्रेटर) झील	राष्ट्रीय भू-विरासत स्मारक
10	लोकटक झील	मणिपुर		मीठे पानी की लेंटिक्यूलर झील	रामसर आर्द्रभूमि; फुमदिस (फ्लोटिंग द्वीप)

byjusexamprep.com

11	चिल्का झील	ओडिशा	पुरी	खारे पानी की झील	भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील; खाड़ी
12	सांभर झील	राजस्थान	सांभर झील शहर	खारे पानी की झील	रामसर आर्द्रभूमि; भारत में सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील
13	हुसैन सागर	तेलंगाना	हैदराबाद	कृत्रिम झील	कृत्रिम जिब्राल्टर चट्टान द्वीप
14	गोविंद वल्लभ पंत सागर	उत्तर प्रदेश	सोनभद्रा	मानव निर्मित झील	रिहंद बांध

भारत में मिट्टी और कृषि

मिट्टी प्रोफाइल और मिट्टी की क्षितिज

- O - क्षितिज, जिसमें कार्बनिक कार्बनिक पदार्थों का एक उच्च प्रतिशत होता है।
- A - कार्बनिक पदार्थ के संचय से क्षितिज गहरा हुआ।
- E - क्षितिज, कार्बनिक पदार्थ, लोहा या एल्यूमीनियम के निष्कासन (उत्कीर्णन) के माध्यम से बनता है। आमतौर पर इन निष्कासन के कारण रंग में हल्का होता है।

- B- उपसतह क्षितिज के लिए उपयोग किया जाने वाला व्यापक वर्ग जो मिट्टी के गठन की प्रक्रिया जैसे रंग और संरचना विकास द्वारा काफी हद तक रूपांतरित किया गया है; मिट्टी, कार्बनिक पदार्थ, लोहा, एल्यूमीनियम, कार्बोनेट, या जिप्सम जैसे सामग्रियों के जमाव (रोशनी); कार्बोनेट या जिप्सम हानि; भंगुरता और उच्च घनत्व; या अपक्षय प्रतिरोधी खनिजों के संचय के लिए तीव्र अपक्षय।
- C - मिट्टी के गठन की प्रक्रियाओं द्वारा एक क्षितिज न्यूनतम रूप से प्रभावित या अप्रभावित।

- R - बेडरॉक।

भारत में पायी जाने वाली मृदा

जलोढ़ मिट्टी

- इस तरह की मिट्टी भारत में मुख्य रूप से भारतीय-गंगा और ब्रह्मपुत्र के मैदान में पायी जाती है। यानि पूरे उत्तरी मैदान और दक्षिण के कुछ पठारी क्षेत्रों में नदी के बेसिन के कुछ भागों में पायी जाती है।
- यह मिट्टी महानदी, गोदावरी, कावेरी और कृष्णा के डेल्टा में भी पायी जाती है।
- जलोढ़ की मिट्टी को मोटे तौर पर दो प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात नई जलोढ़ मिट्टी (खादर) और पुरानी जलोढ़ मिट्टी (भांगर)।
- फसलें उगाई जाती हैं: जलोढ़ मिट्टी अनाज, कपास, तिलहन और गन्ने की तरह की रबी और खरीफ की फसल के लिए उपयुक्त होती है।
- वे आम तौर पर पोटाश में समृद्ध होते हैं लेकिन फॉस्फोरस में खराब होते हैं।

रेगुर या काली मिट्टी

- रेगुर या काली मिट्टी महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश व मुख्य रूप से मालवा के लावा पठार पर बड़े पैमाने पर विकसित हुई है और यह ज्वालामुखीयों की गतिविधियों के कारण बनती हैं।
- ये मिट्टी बहुत उपजाऊ हैं और इसमें चूने का एक उच्च प्रतिशत और पोटाश की एक मध्यम मात्रा होती है।
- इस प्रकार की मिट्टी विशेष रूप से कपास की खेती के लिए अनुकूल है और इसलिए कभी-कभी इसे 'काली कपास मिट्टी' भी कहा जाता है।
- फसलें उगाई जाती हैं: कपास, ज्वार, गेहूं, लिनसीड, चना, फल और सब्जी।

लाल मिट्टी

- लाल मिट्टी कम वर्षा की स्थिति के तहत ग्रेनाइट और गेनेसेस चट्टानों पर विकसित होती है अर्थात रूपांतरित चट्टानों के अपक्षय के कारण विकसित होती है।
- ये मिट्टी आयरन ऑक्साइड के उच्च सम्मिश्रण के कारण रंग में लाल होती है।
- ये मिट्टी नाज़ुक और मध्यम उपजाऊ होती है और मुख्य रूप से तमिलनाडु, दक्षिण-पूर्वी कर्नाटक, उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा के प्रमुख भागों, उत्तर-पूर्वी भारत के पठारों और पहाड़ियों के लगभग पूरे क्षेत्र में मिलती है।
- इस मिटटी में फॉस्फोरिक एसिड, कार्बनिक पदार्थ और नाइट्रोजन सामग्री की कमी होती है।
- फसलें उगाई जाती हैं: गेहूं, चावल, बाजरा की, दलहन।

लेटराइट मिट्टी

- लेटराइट मिट्टी चिकनी मिटटी की चट्टान का एक प्रकार है यह मिट्टी उच्च तापमान और उच्च वर्षा के साथ वैकल्पिक सूखे और गीला रहने की अवधि के तहत गठित होती है
- लेटराइट और लैटरिटिक मिट्टी दक्षिण महाराष्ट्र, केरल और कर्नाटक में पश्चिमी घाट, ओडिशा में कुछ स्थानों पर, छोटा नागपुर के छोटे भागों में और असम, तमिलनाडु, कर्नाटक, के कुछ हिस्सों में और पश्चिमी पश्चिम बंगाल में (विशेष रूप से बीरभूम जिले में) पाई जाती हैं।
- फसलें उगाई जाती हैं
- इस मिटटी में अम्लता के उच्च समावेश के कारण और और नमी बनाए रखने में अक्षमता के कारण इस तरह की मिट्टी कृषि के लिए अनुपयुक्त है ।

रेगिस्तानी मिट्टी

- इस प्रकार की मिट्टी राजस्थान, हरियाणा और दक्षिण पंजाब में पाई जाती है और यह रेतीली होती है।
- बारिश के पानी से पर्याप्त धुलाई के अभाव में यह मिट्टी खारी बन गई है, और इसीलिए ये खेती के लिए अयोग्य है।
- इसके बावजूद आधुनिक सिंचाई की सहायता से यहाँ खेती की जा सकती है।
- गेहूं, बाजरा, मूंगफली, आदि को इस मिट्टी में उगाया जा सकता है।
- इस तरह की मिट्टी फॉस्फेट और कैल्शियम से भरपूर होती है लेकिन नाइट्रोजन और धरण की इसमें कमी होती है।

पर्वतीय मिट्टी

- पहाड़ पर अधिक ऊंचाई पर पाई जाने वाली मिट्टी पर्वत की मिट्टी कहलाती है।
- इस तरह की मिट्टी की विशेषताएँ ऊंचाई के हिसाब से बदल जाती हैं।
- इस तरह की मिट्टी आलू, फल, चाय, कॉफी, मसालों और गेहूं की खेती के लिए उपयुक्त है।

कणों के आकार के आधार पर मिट्टी के प्रकार

1. रेतीली मृदा

- कण आकार में बड़े होते।
- कणों के मध्य पर्याप्त स्थान रहता है।
- यह कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है।
- हालांकि, बाजरा रेतीली मिट्टी में उगाया जा सकता है।

2. चिकनी मृदा

- कण आकार में बहुत छोटे हैं।
- कणों के बीच बहुत कम स्थान रहता हैं
- कणों के बीच कम जगह की वजह से, पानी बना रहता है।

3. चिकनी बलुई मिट्टी (loamy)

- कण रेत की तुलना में छोटे और चिकनी मिट्टी से बड़े होते हैं।
- चिकनी बलुई मिट्टी रेतीली मिट्टी, चिकनी मिट्टी और सिल्ट के मिश्रण है।
- मिट्टी की सही पानी धारण क्षमता होती है

- यह पौधों के विकास के लिए सबसे अच्छा मिट्टी माना जाता है।

भारत में कृषि के प्रकार

भारत में खेती की प्रदर्शित गतिविधियों के विभिन्न प्रकार के होते हैं जो इस प्रकार हैं:

निर्वाह कृषि:

- निर्वाह खेती, खेती का एक प्रकार है, जिसमें लगभग सभी फसलों या पशुओं को बढ़ाया जाता है, थोड़ा सा किसान और किसान के परिवार के लिए छोड़कर व थोड़ा बनाए रखने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।
- निर्वाह खेत आम तौर पर अधिक नहीं सिर्फ कुछ एकड़ से मिलकर ही बनता है, और इसकी खेत प्रौद्योगिकी पुरातन हैं और कम उपज का ही हो पाता है।

मिश्रित कृषि:

- मिश्रित खेती एक कृषि प्रणाली है जिसमें एक किसान एक साथ अलग-अलग कृषि अभ्यास क्रिया आयोजित करता है, जैसे कि नकदी फसलों और पशुओं के रूप में।
- उद्देश्य विभिन्न स्रोतों के माध्यम से आय बढ़ाने के लिए है और साल भर भूमि और श्रम की मांग को पूरक करने के लिए।

स्थानांतरण कृषि:

- स्थानांतरण खेती का मतलब है प्रवासी कृषि का स्थानांतरण।

- इस प्रणाली के तहत जमीन के एक भूखंड में कुछ वर्षों के लिए खेती की जाती है और फिर, जब मिट्टी में थकावट की वजह से फसल की पैदावार में गिरावट आती है और कीट और जंगली पौधों का प्रभाव बढ़ता है, तब खेती का एक किसी और सूनसान क्षेत्र के लिए स्थानांतरण किया जाता है।
- यहां जमीन को फिर से कांट-छांट व जलाने की विधियों को करके साफ़ किया जाता है, और प्रक्रिया को दोहराया है।

स्थानांतरण कृषि के अन्य नाम

चेना	श्रीलंका
लदांग	जावा और इंडोनेशिया
झूम	उत्तर-पूर्वी भारत
पोदू	आंध्र प्रदेश
मिल्या	मेक्सिको और मध्य अमेरिका
कोनुको	वेनेजुएला
रोका	ब्राज़िल
मिल्पा	युकेटन और ग्वाटेमाला

व्यापक कृषि:

- यह खेती की एक प्रणाली है जिसमें किसान अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्र पर सीमित मात्रा में श्रम और पूंजी का उपयोग करता है।
- इस प्रकार की कृषि उन देशों में प्रचलित है, जहां आबादी का आकार छोटा है और कृषि के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध है।
- इसमें प्रति एकड़ उपज तो कम है लेकिन कुल उत्पादन कम आबादी के कारण अधिशेष में होता है।
- यहां मशीनों और प्रौद्योगिकी का खेती में प्रयोग किया जाता है।

गहन कृषि:

- यह खेती की एक प्रणाली है जिसमें कृषक एक अपेक्षाकृत छोटे से क्षेत्र पर श्रम और पूंजी की बड़ी राशि का उपयोग करता है।
- खेती के इस प्रकार का उपयोग उन देशों में किया जाता है कि जहां भूमि के अनुपात में जनसंख्या उच्च है अर्थात आबादी बड़ी है और भूमि छोटी है।
- सालाना फसलों के दो या तीन प्रकार भूमि पर उगाये जा रहे हैं।
- शारीरिक श्रम प्रयोग किया जाता है।

बागान कृषि:

- इस प्रकार की खेती में मुख्य रूप से कृषि नकदी फसलों की खेती करते हैं।
- इसमें एक ही तरह की फसल जैसे रबर, गन्ना, कॉफी, चाय आदि ऊगाई जाती हैं।
- इन फसलों में निर्यात के प्रमुख आइटम हैं।

भारत में प्रमुख फसलें और फसल की पद्धति

आमतौर पर प्रमुख फसलों को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जाता है:

खाद्य फसलें चावल, गेहूं, बाजरा, मक्का और दलहन।

नकदी फसलें गन्ना, तिलहन, बागवानी फसलें, चाय, कॉफी, कपास, रबड़ और जूट।

भारत में फसल की ऋतुएँ

	खरीफ की फसलें	**रबी की फसलें।**	**जायद की फसलें**
समय	खरीफ की फसल को शरद ऋतु की फसल या मानसून की फसल के रूप में भी जाना जाता है, जिसकी कृषि मानसून में की जाती हैं जो जून से सितंबर तक रहता है।	इन्हें सर्दी की फसलों के रूप में भी जाना जाता है। आमतौर पर सितंबर से अप्रैल के बीच विस्तारित अवधि के दौरान इनकी खेती की जाती है। इसकी खेती वसंत के मौसम में की जाती है।	ये गर्मी मौसम की फसलें हैं। इन फसलों को अप्रैल और सितंबर के बीच या रबी ऋतु और खरीफ मौसम के बीच उगाया जाता है
परिस्थियाँ	आर्द्र और गर्म परिस्थितियाँ	ठंड और अपेक्षाकृत शुष्क परिस्थितियाँ	गंगा के क्षेत्र में बोई जाने जाती हैं।
उदाहरण	चावल (धान), मक्का, मूंगफली, कपास, सोयाबीन, अरहर	गेहूं, काबुली चना, सरसों, अलसी, जौ, तिल, सूरजमुखी,	ककड़ी, तरबूज, करेला, कस्तूरी, कद्दू, लौकी

byjusexamprep.com

	(अरहर), मूंग सेम, लाल मिर्च, गन्ना, हल्दी, रागी, ज्वार, बाजरा	धनिया, मटर, प्याज, आलू, टमाटर आदि	

प्रमुख खाद्य फसलें

चावल

- **मृदा का प्रकार:** गहन चिकनी और दोमट मृदा।
- **तापमान:** उच्च आर्द्रता के साथ 22-32 डिग्री सेल्सियस के बीच।
- **वर्षा:** लगभग 150-300 सें.मी.
- **शीर्ष चावल उत्पादक राज्य पश्चिम बंगाल> पंजाब> उत्तर प्रदेश> आंध्र प्रदेश> बिहार हैं।**
- **ओडिशा में** धान की फसलों की तीन किस्में- **ऑस, अमन, और बोरो** उगाई जाती हैं।
- **चीन** दुनिया का शीर्ष चावल उत्पादक देश है। जबकि **भारत का दूसरा स्थान है**।

गेहूं

- **मृदा का प्रकार:** सुसिंचित उपजाऊ दोमट मृदा
- **तापमान:** 10-15 ° C (बुवाई का समय) और 21-26 ° C (तीव्र तेज़ धूप)।
- **वर्षा:** लगभग 75-100 सें.मी.
- **भारत में शीर्ष गेहूं उत्पादक राज्य: उत्तर प्रदेश> पंजाब> मध्य प्रदेश**
- भारत चीन के बाद **दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक** है।

बाजरा

- **मृदा का प्रकार:** यह एक अवर जलोढ़ या दोमट मृदा में उगाया जा सकता है -
- **ज्वार की** फसल को नम क्षेत्रों में कम या बिना सिंचाई के उगाया जाता है।
- **बाजरा-** रेतीली मृदा और उथली काली मृदा।
- **रागी-** लाल, काली, रेतीली, दोमट और उथली काली मृदा। (शुष्क प्रदेश)

byjusexamprep.com

तापमान: 27-32 डिग्री सेल्सियस के बीच

वर्षा: लगभग 50-100 सेमी।

भारत में शीर्ष बाजरा उत्पादक राज्य: राजस्थान> कर्नाटक> महाराष्ट्र

- **ज्वार:** महाराष्ट्र> कर्नाटक> मध्य प्रदेश
- **बाजरा:** राजस्थान> उत्तर प्रदेश> गुजरात
- **रागी:** कर्नाटक> तमिलनाडु> उत्तराखंड

इन्हें **मौटे अनाज** के रूप में भी जाना जाता है। इनमें पोषण तत्व प्रचुरता में पाए जाते है। जैसे, **रागी** में **कैल्शियम, आयरन (लौह), अन्य सूक्षम तत्व** मौजूद होते हैं।

मक्का

- **मृदा प्रकार:** प्राचीन जलोढ़ मृदा।
- **तापमान:** 21-27 डिग्री सेल्सियस के बीच
- **वर्षा:** उच्च वर्षा।
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: कर्नाटक> महाराष्ट्र> मध्य प्रदेश**
- भारत **सातवाँ सबसे बड़ा उत्पादक** है

दलहन

- **मृदा का प्रकार:** रेतीली-दोमट मृदा।
- **तापमान:** 20-27 डिग्री सेल्सियस के बीच
- **वर्षा:** लगभग 25-60 सेमी।
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: मध्य प्रदेश> राजस्थान> महाराष्ट्र**
- भारत दुनिया में दालों का **सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता** देश है।
- भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख दालें **उड़द, अरहर (अरहर), मूंग, मसूर, मटर और चना हैं।**

byjusexamprep.com

- दलहन **फलीदार फसलें हैं**। यह **वायु के माध्यम से नाइट्रोजन फिक्सेशन (अरहर को छोड़कर) द्वारा** मृदा की उर्वरता को बहाल करने में भी सहायता करती हैं। यही कारण है कि इन फसलों को अन्य फसलों के साथ रोटेशन में उगाया जाता है।

गन्ना

- **मृदा का प्रकार:** गहन समृद्ध दोमट मृदा।
- **तापमान:** गर्म और आर्द्र जलवायु के साथ 21-27 ° C के बीच।
- **वर्षा:** लगभग 75-100 सें.मी.
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: उत्तर प्रदेश> महाराष्ट्र> कर्नाटक**
- भारत **ब्राजील के बाद गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।**
- यह **चीनी, खांडसारी, गुड़** का मुख्य स्रोत है।

तिलहन

- **मृदा का प्रकार:** दोमट और असिंचित रेतीली दोमट।
- **तापमान:** 15-30 डिग्री सेल्सियस के बीच
- **वर्षा:** लगभग 30-75 सेमी।
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: मध्य प्रदेश> राजस्थान> गुजरात**
- भारत में उत्पादित मुख्य तिलहन **मूंगफली, नारियल, सरसों, सीसम (तिल), सोयाबीन, कपास के बीज, अरंडी के बीज, अलसी और सूरजमुखी हैं।**
- **मूंगफली एक खरीफ फसल है** और देश में उगने वाले **उत्पादित प्रमुख तिलहनों का लगभग आधा हिस्सा है**।
- **सीसम उत्तर भारत में खरीफ की फसल है और दक्षिण भारत में रबी की फसल है।**
- **अलसी और सरसों रबी फसलें हैं।**
- **अरंडी को दोनों मौसमों अर्थात रबी और खरीफ में उगाया जाता है।**

चाय

- **मृदा का प्रकार:** गहरी और उपजाऊ सिंचित मृदा, धरण और कार्बनिक पदार्थों में समृद्ध।

byjusexamprep.com

- **तापमान:** 20-30 डिग्री सेल्सियस के बीच
- **वर्षा:** लगभग 150-300 सेमी।
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: असम> पश्चिम बंगाल> तमिलनाडु।**
- भारत चाय पौधों **का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक**।
- पूर्वी पहाड़ियों की ढलानों में जलभराव के बिना आर्द्र जलवायु और समान रूप से वितरित वर्षा होती है जो चाय के पौधों की खेती के लिए अनुकूलतम स्थिति है।
- चाय एक **श्रम प्रधान उद्योग है।** चाय के लिए प्रचुर मात्रा में, सस्ते और कुशल श्रम की आवश्यकता होती है। इसकी ताजगी बनाए रखने के लिए इसे चाय बगान के भीतर संसाधित किया जाता है।

कॉफ़ी

- **मृदा का प्रकार:** सिंचितऔर गहरी भुरभुरी दोमट मृदा।
- **तापमान:** 15-28 डिग्री सेल्सियस के बीच
- **वर्षा:** लगभग 150-250 सेमी।
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: कर्नाटक> केरल> तमिलनाडु**
- भारत **सातवां सबसे बड़ा उत्पादक है।**
- पहाड़ियों में सुविकसित कैनोपी बनाई जाती है, जिसमें सदाबहार फलदार वृक्ष शामिल हैं, जो कॉफी की खेती के लिए अनुकूलतम परिस्थिति को सुनिश्चित करते हैं, यही वजह है कि यह फसल मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में केंद्रित है।
- **भारतीय किस्म की कॉफी 'अरेबिका' दुनिया भर में प्रसिद्ध है।**

रबर

- **मृदा का प्रकार:** सिंचित जलोढ़ मृदा।
- **तापमान:** नम और आर्द्र जलवायु के साथ 25 डिग्री सेल्सियस से अधिक।
- **वर्षा:** 200 सेमी से अधिक।
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: केरल> तमिलनाडु> कर्नाटक।**
- यह एक **विषुवतीय फसल है।** लेकिन विशेष परिस्थितियों में, इसे **उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय में भी उगाया जा सकता है।**

byjusexamprep.com

कपास

- **मृदा का प्रकार:** कपास को दक्कन के पठार की सिंचित काली मृदा की आवश्यकता होती है।
- **तापमान:** 21-30 °C के मध्य
- **वर्षा:** लगभग 50-100 सेमी।
- **शीर्ष कपास उत्पादक राज्य: गुजरात> महाराष्ट्र> तेलंगाना**
- कपास को **उगाने के लिए 210 शीत मुक्त दिन और तीव्र धूप की आवश्यकता होती है।**
- कपास खरीफ की **फसल है और इसे परिपक्व होने के लिए 6 से 8 महीने की आवश्यकता होती है।**

जूट

- **मृदा का प्रकार:** सिंचित जलोढ़ मृदा
- **तापमान:** 25-35 डिग्री सेल्सियस के बीच
- **वर्षा:** लगभग 150-250 सेमी
- **शीर्ष उत्पादक राज्य: पश्चिम बंगाल> बिहार> असम**
- जूट की फसल **गंगा- ब्रह्मपुत्र नदी डेल्टा** की समृद्ध जलोढ़ मृदा के कारण **मुख्य रूप से पूर्वी भारत में केंद्रित है।**
- इसे **गोल्डन फाइबर** के रूप में जाना जाता है **।**

भारत जूट का सबसे बड़ा उत्पादक है।

प्राकृतिक वनस्पति, भारत के विभिन्न प्रकार के वन

उष्णकटिबंधीय सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वन

- भारत के उन भागों में पाए जाते हैं जहां 200 सेमी. और उससे अधिक वार्षिक वर्षा होती है।
- यहाँ लघु शुष्क ऋतु के साथ वर्षा लगभग पूरे वर्ष भर होती है।
- नम एवं गर्म जलवायु सभी प्रकार की घनी वनस्पतियों पेड़, झाड़ियाँ और लताओं को वृद्धि करने में मदद करती है- जिससे वनस्पतिक विकास कई स्तरीय होता है।

- पेड़ निश्चित समय अवधि तक पत्तियां नहीं गिराते हैं। इसलिए जंगल साल भर हरे-भरे दिखाई देते हैं।
- व्यावसायिक रूप से उपलब्ध कुछ पेड़ चंदन की लकड़ी, आबनूस, महोगनी, शीशम, रबड़, सिनकोना आदि हैं।
- इन वनों में मुख्य जानवर हाथी, बंदर लेमुर, हिरण, एक सींग वाले गैंडा आदि हैं।
- पश्चिमी तट; पश्चिमी घाट; लक्षद्वीप समूह, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह; असम के ऊपरी हिस्से; और तमिलनाडु तट इन वनों से आच्छादित हैं।
- ये विषुवतीय वर्षावनों के समान हैं।

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

- ये भारत के सबसे विस्तृत एवं सबसे फैले हुए जंगल हैं।
- उन्हें मानसून वने के रूप में भी जाना जाता है।
- ये भारत के उन भागों में पाए जाते हैं जहां 200 सेमी से 70 सेमी के बीच वार्षिक वर्षा होती है।
- यहाँ मौसमी प्रकृति की वर्षा होती है।
- इस प्रकार के वन में, गर्मियों की ऋतु में पेड़ लगभग छह से आठ महीनों के लिए अपनी पत्तियां गिरा देते हैं।
- यहां पाए जाने वाले जानवर हैं: शेर, बाघ, सुअर, हिरण, हाथी, विभिन्न प्रकार के पक्षी, छिपकली, सांप, कछुआ, इत्यादि।

उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन

- 200 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा वाले वन।

- ये पाए जाते हैं: (a) हिमालय की तलहटी के साथ भारत का पूर्वी हिस्सा- उत्तर-पूर्वी राज्य, (b) झारखंड, पश्चिम उड़ीसा और छत्तीसगढ़, (c) पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान पर।
- उदाहरण: सागौन, बांस, साल, शीशम, चंदन, खैर, कुसुम, अर्जुन, शहतूत, आदि।

उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन

- 100 से 70 सेमी. वार्षिक वर्षा वाले वन।
- उत्तर प्रदेश और बिहार के मैदानी इलाकों में (a) प्रायद्वीपीय पठार और (b) के बरसाती भागों में पाया जाता है।
- उदाहरण: सागौन, साल, पीपल, नीम आदि।

उष्णकटिबंधीय शंकुधारी वन

- ये 70 सेमी. से कम वर्षा वाले भागों में पाए जाते हैं।
- यहाँ वर्षा बेसमय, अनियमित और असंगत होती है।
- मरुद्भिद उष्णकटिबंधीय कांटे से आच्छादित क्षेत्रों पर ज्यादा हैं।
- ये गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और हरियाणा के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों सहित उत्तर-पश्चिमी भाग में पाए जाते हैं।
- यहाँ की मुख्य पौधों की प्रजातियाँ बबूल, ताड़, छोटी दुद्धी, कैक्टस, खैर, कीकर आदि हैं।
- इस वनस्पति में पौधों के तने, पत्तियां और जड़ों जल को संरक्षित करने के अनुकूल हैं।
- तना रसीला होता है और वाष्पीकरण को कम करने के लिए पत्तियां ज्यादातर मोटी और छोटी होती हैं।
- यहाँ सामान्य जानवर चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िया, बाघ, शेर, जंगली गधा, घोड़े, ऊँट आदि हैं।

उष्णकटिबंधीय पर्वतीय वन

- ऊंचाई में वृद्धि के साथ तापमान में कमी प्राकृतिक वनस्पति में संगत परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है।
- पहाड़ की तलहटी से लेकर शीर्ष तक एक ही पदानुक्रम पाया जाता है जैसा कि उष्णकटिबंधीय से टुंड्रा क्षेत्र तक देखा जाता है।
- ये अधिकांशतः हिमालय के दक्षिणी ढलानों दक्षिणी और पूर्वोत्तर भारत में ऊंचाई वाले स्थान में पाए जाते हैं।
- 1500 मीटर की ऊंचाई तक शीशम के साथ ऊष्ण कटिबंधीय आद्र पर्णपाती वन पाए जाते हैं।
- 1000-2000 मीटर ऊंचाई पर, आर्द्र शीतोष्ण प्रकार की जलवायु पायी जाती है, जिसमें सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले पेड़ जैसे ओक और शाहबलूत पाए जाते हैं।
- 1500-3000 मीटर ऊँचाई पर, समशीतोष्ण वृक्ष जैसे चीर, सनोबर, देवदार, चांदी के देवदार, स्प्रूस, देवदार आदि को समशीतोष्ण वन में शामिल करते हैं।
- 3500 मीटर से अधिक ऊंचाई पर नम शीतोष्ण घास के मैदान जैसे मर्ग (कश्मीर), बुग्यालों (उत्तराखंड) आम हैं।
- जैसे-जैसे ये हिम रेखा के पास पहुंचते हैं, ये छोटे होते जाते हैं।
- अंततः झाड़ियों अल्पाइन घास के मैदानों में विलीन हो जाते हैं।
- ये घास के मैदान बड़े पैमाने पर गुर्जरों और बक्कर वालों जैसे खानाबदोश जनजातियों द्वारा चराई के लिए उपयोग किए जाते हैं।
- अधिक ऊंचाई पर, कुछ वनस्पति काई और लाइकेन टुंड्रा प्रकार की वनस्पति का भाग हैं।

- इन वनों में पाए जाने वाले मुख्य जानवर कश्मीरी हिरण, चित्तीदार हिरण, जंगली भेड़, सियार, याक, हिम तेंदुआ, दुर्लभ लाल पांडा, भेड़ और मोटी फर वाली बकरियां आदि हैं।
- भारत में इनका अध्ययन दो समूहों में किया जाता है: उत्तरी पर्वतीय वन और दक्षिणी पर्वतीय वन।
- उत्तरी पर्वतीय वन: ये हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से जुड़े हैं। वनस्पति के प्रकार सूर्य की रोशनी, तापमान और वर्षा द्वारा नियंत्रित होते हैं जोकि ऊपर वर्णित है।
- दक्षिणी पर्वतीय वन: ये नीलगिरी, अन्नामलाई और इलायची की पहाड़ियों से जुड़े हैं। ये नम समशीतोष्ण वन हैं जिनमें समृद्ध स्थानिक जैव विविधता है और इन्हें शोला वन के रूप में वर्णित किया जाता है।

मैंग्रोव वन

- मैंग्रोव वन उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के डेल्टा क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- इन्हें ज्वारीय वनों और झील के वनों के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ये अंतर-ज्वारीय क्षेत्र से जुड़े होते हैं।
- उनकी जैव विविधता और वन घनत्व भूमध्य रेखीय वर्षावनों और उष्ण कटिबंधीय सदाबहार एवं अर्ध-सदाबहार वनों के साथ समान हैं।
- मैंग्रोव नमक अनुकूलित पौधे हैं जिनकी जड़ें न्यूमैटोफोरस (इनकी जड़ें जमीन से ऊपर की ओर निकलती हैं) अनुकूलित हो रही हैं।
- मैंग्रोव पारिस्थितिक तंत्र एक अनोखा पारिस्थितिकी तंत्र है क्योंकि आवर्ती बाढ़ और शुष्कता और साथ ही नम लवणता के अनुकूल है।
- भारत में दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव क्षेत्र पाया जाता है।

- सुंदरबन, महानदी, गोदावरी-कृष्णा और कावेरी डेल्टा इन जंगलों से सबसे महत्वपूर्ण रूप से पाए जाते हैं।
- सुंदरबन दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव है। यह सुंदरी पेड़ के लिए प्रसिद्ध है जो टिकाऊ सख्त लकड़ी प्रदान करता है।
- कुछ अन्य उदाहरण राइज़ोफोरा, एविसेनिया आदि हैं।
- डेल्टा के कुछ हिस्सों में ताड़, नारियल, केवड़ा, अगर आदि भी उगते हैं।
- रॉयल बंगाल टाइगर इन वनों में एक प्रसिद्ध जानवर है।
- इन जंगलों में कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल, सांप भी पाए जाते हैं।
- महानदी डेल्टा की भीतरकनिका मैंग्रोव अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए भी प्रसिद्ध है।

विश्व भूगोल: पर्वतीय श्रृंखलाएं, चोटियां, नदियां, झीलें

प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं एवं चोटी

क्रमांक	पर्वत श्रृंखलाएं	प्रमुख/उच्चतम चोटी	स्थान	विवरण
1.	रॉकी पर्वत	माउंट एल्बर्ट (रॉकी में सबसे ऊंची चोटी)	उत्तरी अमेरिका	यह दुनिया के सबसे लंबे वलित पर्वतों में से एक है और कनाडा से पश्चिमी

				अमेरिका (न्यू मैक्सिको राज्य) तक फैला है
2.	एप्लेशियन पर्वत	माउंट मिशेल, उत्तरी कैरोलिना, अमेरिका (एप्लेशियन पर्वत की सबसे ऊंची चोटी)	उत्तरी अमेरिका	यह खनिज संसाधनों से समृद्ध एक वलित पर्वत है।
3.	आल्पस	माउंट ब्लैंक (फ्रांस-इटली सीमा)	यूरोप	यह वलित पर्वत है और डेन्यूब, राइन आदि नदियों का स्रोत है।
4.	सिएरा नेवादा	माउंट व्हिटनी	कैलीफोर्निया, अमेरिका	कई रेड इंडियन जनजातियों के लिए आवास

5.	अलास्का रेंज	माउंट मैकिनले	उत्तरी अमेरिका	माउंट मैकिनले उत्तरी अमेरिका में सबसे ऊंची चोटी है।
6.	अल्टाई पर्वत	बेलुखा पर्वत	मध्य एशिया	नवोदित वलित पर्वत जो कजाकिस्तान से उत्तरी चीन तक फैले हुए हैं।
7.	एंडीज पर्वत	माउंट अकोंकागुआ	दक्षिणी अमेरिका	विश्व में सबसे लंबी पर्वत श्रृंखला
8.	एटलस पर्वत	माउंट टौब्कल	उत्तर पश्चिम अफ्रीका	मोरक्को और ट्यूनीशिया में फैले हुए नवोदित वलित पर्वत
9.	ड्रेकेन्सबर्ग पर्वत	माउंट लिसोटो	दक्षिण अफ्रीका	नवोदित वलित पर्वत
10.	काकेशस पर्वत	माउंट एल्ब्रुस	यूरोप	काला सागर और कैस्पियन सागर के बीच स्थित

11.	यूराल पर्वत	माउंट नरोद्नाया	रूस	यह पर्वत श्रृंखला यूरोप और एशिया के बीच दीवार के रूप में कार्य करती है
12.	हिंदुकुश पर्वत	माउंट ट्रिच मीर	पाकिस्तान और अफगानिस्तान	ऊंची-नीची स्थलाकृति के साथ वलित पर्वत जो परिवहन को मुश्किल बनाती है
13.	हिमालय पर्वत	माउंट एवरेस्ट	एशिया	एशिया में नवोदित वलित पर्वत जो भारतीय उपमहाद्वीप को एशियाई मैदानी क्षेत्रों से अलग करता है
14.	अराकान योमा	माउंट केनेडी की चोटी	म्यांमार	यह उत्तर से दक्षिण दिशा तक फैले हुए हैं। स्थानांतरित कृषि की जाती है।

15.	कुनलुन पर्वत	माउंट मुज़टैघ	तिब्बत के पठार के उत्तर में और पश्चिमी चीन	यह नवोदित वलित पर्वतों में से एक है।
16.	वॉस्जेस	माउंट ग्रैंड बैलून	पूर्वी फ्रांस, यूरोप	अंगूर की खेती और शराब के निर्माण के लिए प्रसिद्ध
17.	ग्रेट डिवाइडिंग रेंज	माउंट कोज़िअस्को	ऑस्ट्रेलिया	यह डार्लिंग और मुर्रे नदियों का स्रोत है।

संसार की प्रमुख नदियां

क्रमांक	**नदी**	**स्थान**	**विवरण**
1.	अमेजन नदी	दक्षिणी अमेरिका	यह दूसरी सबसे लंबी नदी है जो पेरू, कोलंबिया, ब्राजील और अटलांटिक महासागर में बहती है।

2.	मिसीसिपी नदी	उत्तरी अमेरिका	यह मैक्सिको की खाड़ी में एक पक्षी के पैर जैसे डेल्टा का निर्माण करती है, मिसौरी नदी इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदी है।
3.	सेंट लॉरेंस नदी	उत्तरी अमेरिका	यह सेंट लॉरेंस की खाड़ी में निकलती है जो उत्तरी अमेरिका का एक महत्वपूर्ण परिवहन गलियारा है।
4.	ऑरेंज नदी	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका की सबसे लंबी नदी और उसके मुहाने के साथ नदीतल में हीरे पाए जाते हैं।
5.	कॉगों नदी	अफ्रीका	यह नदी भूमध्य रेखा को दो बार पार करती है और दक्षिण अटलांटिक महासागर में गिरती है।
6.	नील नदी	अफ्रीका	यह दुनिया की सबसे लंबी नदी है, जो विक्टोरिया झील से निकलती है और भूमध्य सागर में गिरती है।

7.	राइन नदी	पश्चिमी यूरोप	यह जर्मनी और नीदरलैंड में बहती है। यह यूरोप के सबसे व्यस्ततम जलमार्गों में से एक है।
8.	डेन्यूब नदी	यूरोप	यह जर्मनी, हंगरी, ऑस्ट्रिया, स्लोवाकिया, सर्बिया, रोमानिया से होकर काला सागर में गिरती है।
9.	वोल्गा नदी	यूरोप, रूस	यह यूरोप की सबसे लंबी नदी है, यह कैस्पियन सागर में गिरती है।
10.	टाइग्रिस नदी	तुर्की, ईराक	मोसुल, बगदाद, बसरा जैसे शहर इसके तट पर स्थित थे और यह फारस की खाड़ी में गिरती है।
11.	फरात नदी	तुर्की, सीरिया, ईराक	सीरिया के लिए पानी का मुख्य स्रोत। यह फारस की खाड़ी में गिरती है।
12.	इरावदी नदी	म्यांमार	मार्तबान की खाड़ी में गिरती है

13.	मेकांग नदी	चीन, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम	इसे 'पूर्व का डेन्यूब' भी कहा जाता है, और यह दक्षिण चीन सागर में मिलती है।
14.	यांग्त्सी नदी	चीन	यह तिब्बत के पठार से निकलती है और पूर्वी चीन सागर में मिलती है। यह चीन में सबसे लंबी नदी है।

संसार की प्रमुख झीलें

क्रमांक	नाम	स्थान	तथ्य
1.	टिटिकाका झील	दक्षिणी अमेरिका	यह एंडीज पर्वत में स्थित दुनिया में जहाज चलाने के लिए सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली झील है।
2.	ग्रेट बीयर झील	कनाडा, उत्तरी अमेरिका	यह कनाडा की एक बड़ी हिमाच्छादित झील है। गर्मियों के मौसम के दौरान यहां कनाडा के एस्किमोस शिविर लगाए जाते हैं।

3.	ग्रेट लेक	उत्तरी अमेरिका	इसमें उत्तरी अमेरिका की पांच बड़ी झीलें सुपीरियर झील, मिशिगन, हूरॉन, इरी, ओन्टारियो शामिल हैं। सुपीरियर झील संसार की दूसरी सबसे बड़ी झील है।
4.	मलावी झील	मध्य अफ्रीका	यह अफ्रीका की तीसरी सबसे बड़ी झील है और तंजानिया, मोजाम्बिक की सीमा है।
5.	तांगान्यीका झील	पूर्वी अफ्रीका	यह अफ्रीका की सबसे गहरी और दूसरी सबसे बड़ी झील है।
6.	विक्टोरिया झील	अफ्रीका	अफ्रीका की सबसे बड़ी नदी और भूमध्य रेखा से गुजरती है।
7.	केनजी झील	अफ्रीका	अफ्रीका की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील, सिंचाई के लिए उपयोग की जाती है।
8.	मृत सागर	पश्चिमी एशिया	यह पूर्व में जॉर्डन और पश्चिम में फिलिस्तीन, इज़राइल से घिरी हुई है। यह उच्च लवणता के लिए प्रसिद्ध है।

9.	अराल सागर	मध्य एशिया	उज़्बेकिस्तान और कज़ाकिस्तान के बीच स्थित है। हाल के वर्षों में यह तेजी से घट रही है।
10.	बैकाल झील	रूस	यह एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है और संसार में सबसे गहरी है।
11.	कैस्पियन सागर	यूरेशिया	यह संसार की सबसे बड़ी झील है और यह रूस, कज़ाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ईरान और अजरबैजान से घिरी हुई है।

महत्वपूर्ण महासागर धाराएँ:

एक निश्चित पद्धति में सतही जाल के बड़े भाग की सामान्य गतिविधि को महासागरीय धारा कहा जाता है।

महासागरीय धाराओं के विकास के कारण

1. पृथ्वी के घूर्णन के परिणामस्वरूप विक्षेपण या कोरिओलिस बल की उत्पत्ति होती है।
2. भूमंडलीय पवनें।
3. भूमध्य रेखा और ध्रुवों के बीच समुद्र के जल के तापमान में अंतर।
4. महासागर का आकार जल के घनत्व को प्रभावित करता है, जो कि महासागरीय जल की गतिविधि का मुख्य कारण है।
5. महाद्वीप का आकार एवं विन्यास भी महासागर की धारा की दिशा निर्धारित करते हैं।

महासागरीय धाराएँ

तापमान के आधार पर महासागरीय धाराओं को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया जा सकता हैं:

1. **गर्म धाराएँ:** वे महासागरीय धाराएं गर्म भूमध्य क्षेत्र से शीत ध्रुवीय क्षेत्रों (जिनकी सतह का तापमान अधिक होता है) की ओर प्रवाहित होती हैं, उन्हें गर्म धाराएँ कहते हैं।
2. **शीत धाराएँ:** वे महासागरीय धाराएं ध्रुवीय क्षेत्र से भूमध्यरेखीय क्षेत्र (जिनकी सतह का तापमान ठंडा ठंडा होता है) की प्रवाहित होती हैं, उन्हें शीत धाराएं कहते हैं।

अटलांटिक महासागर की प्रमुख महासागरीय धाराएं

अटलांटिक महासागर की गर्म धाराएं	**अटलांटिक महासागर की शीत धाराएँ**
1. उत्तर भूमध्यवर्ती धारा जो एंटीलिज धारा और कैरिबियन धारा में विभाजित हो जाती है।	**1. लैब्राडोर धारा-** बाफिन की खाड़ी से निकलकर यह बाफिन के दक्षिण-पूर्व भाग तथा ग्रीनलैंड से होते हुए न्यू फाउंडलैंड से गल्फ स्ट्रीम से मिल जाती है।
2. दक्षिण भूमध्यवर्ती धारा उत्तर-पूर्व ब्राजील में उत्तरी केयेन धारा और दक्षिणी ब्राजीलियन धारा (दक्षिण अटलांटिक महासागर) में द्विभाजित हो जाती है।	2. ग्रीनलैंड की **इरमिंगर धारा** ग्रीनलैंड और आइसलैंड के बीच प्रवाहित होती है और उत्तरी अटलांटिक धारा के साथ मिल जाती है।

byjusexamprep.com

3. गल्फ स्ट्रीम - यह सुदृढ़ महासागरीय धाराओं में से एक है, जिसका उद्गम मेक्सिको की खाड़ी में होता है। इसमें शामिल है:- **(i) फ्लोरिडा धारा- फ्लोरिडा** के जलडमरूमध्य से केप हैटरस के मध्य (USA) **(ii) गल्फ स्ट्रीम (शीत दीवार) -** केप हैटर्स से ग्रैंड बैंक (पूर्वोत्तर USA) के मध्य **(iii) उत्तर अटलांटिक धारा -** न्यू फाउंडलैंड के समीप ग्रांड बैंक से पश्चिमी यूरोप के मध्य।	**3. कैनरी धारा-** दक्षिणी दिशा में इबेरियन प्रायद्वीप और उत्तरी अफ्रीका के पश्चिमी तट पर उत्तरी अटलांटिक धारा के एक भाग।
4. विपरीत भूमध्यरेखीय धारा- उत्तर और दक्षिण भूमध्यरेखीय धारा के मध्य पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होती है।	**4. फ़ॉकलैंड धारा -** दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तट पर उत्तर की ओर प्रवाहित होते हुए अर्जेंटीना तक जाती है।
	5. दक्षिण अटलांटिक धारा- लगभग 400 दक्षिण अक्षांश पर पछुआ पवनों के प्रभाव में, ब्राज़ीलियाई धारा दक्षिण अटलांटिक धारा के रूप में प्रवाहित होती है।

byjusexamprep.com

	6. बेंगुएला धारा- दक्षिण अफ्रीका के पश्चिमी तट पर उत्तर की ओर प्रवाहित होती है।

प्रशांत महासागर की प्रमुख महासागरीय धाराएँ

प्रशांत महासागर की गर्म धाराएँ	**प्रशांत महासागर की शीत धाराएँ**
1. उत्तर भूमध्यरेखीय धारा- मेक्सिको के पश्चिमी तट से फिलीपींस तक पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है।	**1. ओयाशियो (कुरील) धारा-** बेरिंग धारा या अलास्का धारा और ओकोस्क धारा मिलकर ओयाशियो धारा का निर्माण करती हैं।
2. दक्षिण विषुवतीय धारा - दक्षिणी प्रशांत महासागर में पश्चिम की ओर बहती है और नए गिनी के पास उत्तरी और दक्षिणी शाखाओं में विभाजित होती है।	**2. कैलिफ़ोर्निया धारा-** संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी तट पर प्रवाहित होती है और अंत में उत्तरी भूमध्यरेखीय धारा (गर्म) में विलीन हो जाती है।
3. विपरीत भूमध्यरेखीय धारा- उत्तर और दक्षिण भूमध्यरेखीय धारा के बीच विपरीत दिशा में प्रवाहित होती है।	**3. पश्चिम पवन प्रवाह -** पश्चिम-पश्चिम के प्रभाव में 400-500 दक्षिण अक्षांश के क्षेत्र में पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होती है।
4. कुरोशियो या जापान करंट - ताइवान से बेरिंग स्ट्रेट तक प्रवाह।	**4. पेरूवियन (हम्बोल्ड्ट) धारा -** पश्चिम पवन प्रवाह के विस्तार के रूप में उत्तर अमेरिका के पश्चिमी तट पर उत्तर दिशा में प्रवाहित होती है।

हिंद महासागर की प्रमुख महासागरीय धाराएँ

byjusexamprep.com

हिंद महासागर की गर्म धाराएँ

1. **भारतीय भूमध्यरेखीय धारा:** दक्षिण हिंद महासागर में पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है, मेडागास्कर में विभाजित होकर मोजाम्बिक और एगुलस धारा के रूप में दक्षिणी दिशा की ओर प्रवाहित होती है।
2. **दक्षिण पश्चिम मॉनसून धारा:** भारत के तटों पर पूर्व की दिशा में प्रवाहित होती है।
3. **उत्तर पश्चिम मानसून धारा:** सर्दियों के दौरान भारत के पूर्वी तटों पर प्रवाहित होती है।

दुनिया के प्रमुख महासागरीय मार्ग

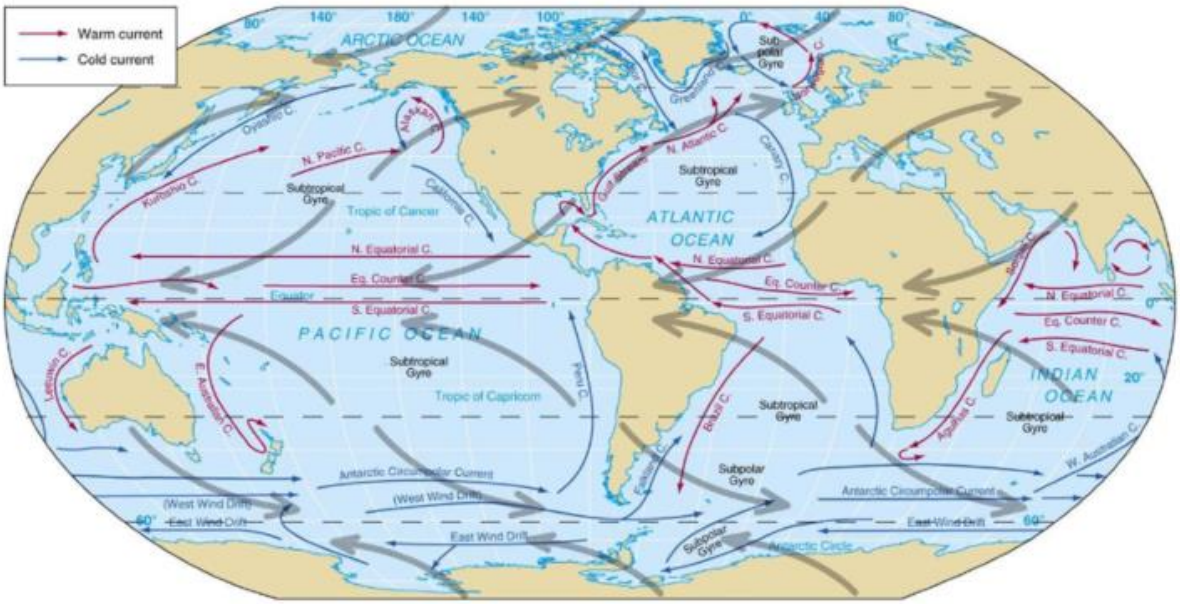

शीतोष्ण घास के मैदान और उनके स्थान की सूची:

Fig. 137 The Temperate Grasslands

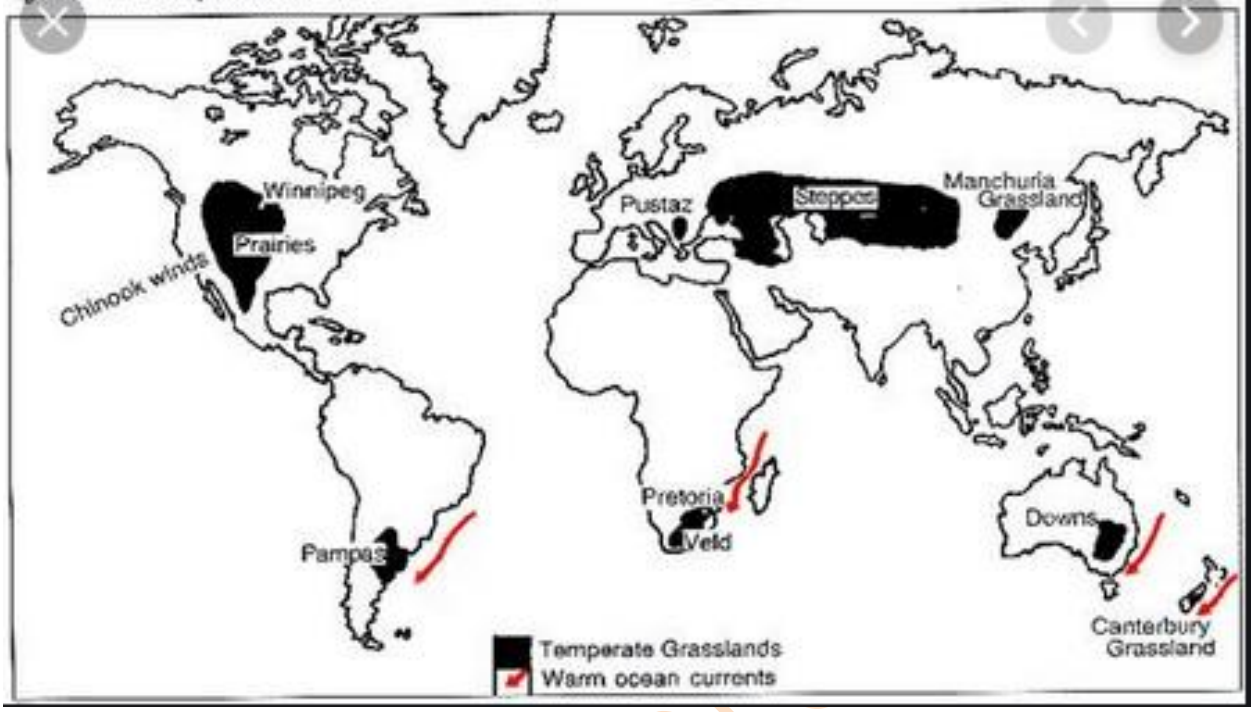

वितरण

- वे महाद्वीपों के अंदरूनी हिस्सों में, रेगिस्तानों की सीमा और भूमध्यसागरीय क्षेत्र से दूर होते हैं।
- पश्चिमी हवा क्षेत्र के अन्दर रखा गए है|
- उत्तरी गोलार्ध में घास के मैदान पूरी तरह से महाद्वीपीय और व्यापक हैं।
- यूरेशिया में, इन्हें स्टेपेस कहा जाता है जो काले समुद्र के किनारों से पूर्व की ओर अल्ताई पर्वत की तलहटी तक फैले हुए हैं।
- घास के मैदान को नीचे दिए गए विभिन्न नामों से जाना जाता है:

क्षेत्र	घास का मैदान
हंगरी और मंचूरिया के मैदान	पुस्टाज़
उत्तरी अमेरिका	प्रेयरी
अर्जेंटीना और उरुग्वे	पम्पास
उत्तरी दक्षिण अफ्रीका	बुश-वेल्ड (अधिक उष्णकटिबंधीय)
दक्षिणी दक्षिण अफ्रीका	उच्च वेल्ड (अधिक समशीतोष्ण)
ऑस्ट्रेलिया का मरे-डार्लिंग बेसिन	डाउंस

न्यूजीलैंड	कैंटबरी

गर्म और ठंडी स्थानीय हवाएँ और उनके स्थान:

- स्थानीय पवन तापमान और दबाव में स्थानीय अंतर के कारण होती हैं।
- स्थानीय पवन चार प्रकार की होती हैं जिनमें गर्म, ठंडी, पारंपरिक और ढालू शामिल हैं।
- ये पवन केवल छोटे क्षेत्रों पर प्रभाव डालती हैं।
- स्थानीय पवन एक छोटे से क्षेत्र में दिन या वर्ष की एक विशेष अवधि के दौरान बहती हैं।
- ये पवन क्षोभमंडल के सबसे निचले स्तरों में पाई जाती हैं।
- कई ऐसी पवन हैं जो दुनिया भर में बहती हैं, उनमें से कुछ ठंडी हैं, कुछ गर्म हैं, कुछ नम हैं और कुछ शुष्क हैं।
- **ठंडी पवन** में बोर, मिस्ट्रल, ग्रेगले, चिनूक, पुरगा, आदि शामिल हैं।
- **गर्म पवन** में ज़ोंडा, सिरोको, चिनूक, लू आदि शामिल हैं।
- **नम पवन**में एलीफेंटा शामिल है।
- **शुष्क हवा**में कालिमा शामिल है।

महत्वपूर्ण जल निकायों के आसपास के देश:

1 **कैस्पियन सागर आसपास के देश**

रूस, ईरान, अज़रबैजान, कजाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान

2 ब्लैक सी के आसपास के देश

यूक्रेन, रूस, जॉर्जिया, तुर्की, बुल्गारिया, रोमानिया

3 रेड सी के आसपास के देश

ईस्टर्न किनारे के: सऊदी अरब। यमन।

पश्चिमी किनारे: मिस्र। सूडान। इरिट्रिया। जिबूती।

4 एड्रियाटिक सागर के आसपास के देश

अल्बानिया, बोस्निया और हर्जेगोविना, क्रोएशिया, इटली, मोंटेनेग्रो और स्लोवेनिया

5 भूमध्य सागर के आसपास के देश

अल्बानिया, अल्जीरिया, बोस्निया और हर्जेगोविना, क्रोएशिया, साइप्रस, मिस्र, फ्रांस, ग्रीस, इजरायल, इटली, लेबनान, लीबिया, माल्टा, मोनाको, मोंटेनेग्रो, मोरक्को, स्लोवेनिया, स्पेन, सीरिया, ट्यूनीशिया और तुर्की के आसपास के देश

भारत के खनिज

खनिज	प्रकार	खदानें	शीर्ष उत्पादक (राज्य)	शीर्ष उत्पादक (देश)	शीर्ष भंडार (राज्य)
लौह अयस्क	धातु (लौह)	बाराबिल -कोइरा घाटी (ओडिशा) बैलाडीला खान (छत्तीसगढ़)	1. ओडिशा 2. छत्तीसगढ़ 3. कर्नाटक	1.ऑस्ट्रेलिया 2. ब्राज़ील 3. चीन 4. भारत	1. ओडिशा 2. झारखंड 3. छत्तीसगढ़

		दल्ली-राजहारा (छत्तीसगढ़) - भारत में सबसे बड़ी खदान			
मैंगनीज़	धातु (लौह)	नागपुर - भंडारा क्षेत्र (महाराष्ट्र) गोंडाइट खान (ओडिशा) खोंडोलाइट भंडार (ओडिशा)	1. मध्य प्रदेश 2. महाराष्ट्र	1. चीन 2. गैबोन 3. दक्षिण अफ्रीका 5. भारत	1. ओडिशा 2. कर्नाटक 3. मध्य प्रदेश
क्रोमाइट	धातु (लौह)	सुकिंडा घाटी (ओडिशा) हसन क्षेत्र (कर्नाटक)	1. ओडिशा 2. कर्नाटक 3. आंध्र प्रदेश	1. दक्षिण अफ्रीका 2. भारत 3. रूस	1. सुकिंडा घाटी (ओडिशा) 2. गुटूंर क्षेत्र (आंध्र प्रदेश)

निकिल	धातु (लौह)	सुकिंडा घाटी (ओडिशा) सिंहभूम क्षेत्र (झारखंड)	1. ओडिशा 2. झारखंड	1. फिलीपींस 2. रूस 3. कनाडा	1. ओडिशा 2. झारखंड 3. कर्नाटक
कोबाल्ट	धातु (लौह)	सिंहभूम क्षेत्र (झारखंड) केंडुझर (ओडिशा) त्यूनसांग (नागालैंड)	1. झारखंड 2. ओडिशा 3. नागालैंड	1. कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य 2. चीन 3. कनाडा	
बॉक्साइट	धातु (गैर-लौह)	बलांगीर (ओडिशा) कोरापुट (ओडिशा) गुमला (झारखंड) शहडोल (मध्य प्रदेश)	1. ओडिशा 2. गुजरात	1. ऑस्ट्रेलिया 2. चीन 3. ब्राजील	1. जूनागढ़ (गुजरात) 2. दुर्ग (छत्तीसगढ़)
तांबा	धातु (गैर-लौह)	मालानजखंड बेल्ट (मध्य प्रदेश) खेतरी बेल्ट (राजस्थान) खो-दरिबा (राजस्थान)	1. मध्य प्रदेश 2. राजस्थान 3. झारखंड	1. चिली 2. चीन 3. पेरू	1. राजस्थान 2. मध्य प्रदेश 3. झारखंड

सोना	धातु (गैर-लौह)	कोलार गोल्ड फील्ड (कर्नाटक) हुट्टी गोल्ड फील्ड (कर्नाटक) रामागिरी माइंस (आंध्र प्रदेश) सुनारनारेखा सैंड्स (झारखंड)	1. कर्नाटक 2. आन्ध्र प्रदेश	1. चीन 2. यू.एस.ए 3. दक्षिण अफ्रीका	1. बिहार 2. राजस्थान 3. कर्नाटक
चांदी	धातु (गैर-लौह)	ज़वार माइंस (राजस्थान) टुंडू माइंस (झारखंड) कोलार गोल्ड फील्ड (कर्नाटक)	1. राजस्थान 2. कर्नाटक	1. मेक्सिको 2. पेरू 3. चीन	1. राजस्थान 2. झारखंड
सीसा (लेड)	धातु (गैर-लौह)	रामपुरा आघूचा (राजस्थान) सिंदेसर खान (राजस्थान)	1. राजस्थान 2. आंध्र प्रदेश 3. मध्य प्रदेश	1. चीन 2. ऑस्ट्रेलिया 3. यू.एस.ए	1. राजस्थान 2. मध्य प्रदेश

टिन	धातु (गैर-लौह)	दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)	छत्तीसगढ़ (भारत का एकमात्र राज्य)	1. चीन 2. इंडोनेशिया 3. पेरू	छत्तीसगढ़
मैग्नीशियम	धातु (गैर-लौह)	चाक हिल्स (तमिलनाडु) अल्मोड़ा (उत्तराखंड)	1. तमिलनाडु 2. उत्तराखंड 3. कर्नाटक	1. चीन 2. रूस 3. तुर्की	1. तमिलनाडु 2. कर्नाटक
चूना पत्थर (लाइमस्टोन)	अधातु	जबलपुर (मध्य प्रदेश) सतना (मध्य प्रदेश) कड़प्पा (आंध्र प्रदेश)	1.राजस्थान 2.मध्य प्रदेश	1. चीन 2. भारत	1. आंध्र प्रदेश 2. राजस्थान 3. गुजरात
अभ्रक (माइका)	अधातु	गुडुर माइंस (आंध्र प्रदेश) अरावली (राजस्थान) कोडरमा (झारखंड)	1. आंध्र प्रदेश 2. राजस्थान 3. ओडिशा	1. भारत 2. रूस	

डोलोमाइट	अधातु	बस्तर, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) बीरमित्रापुर (ओडिशा) खम्मम क्षेत्र (आंध्र प्रदेश)	1. छत्तीसगढ़ 2. आंध्र प्रदेश	1. भारत	1. छत्तीसगढ़ 2. ओडिशा
एस्बेस्टस	अधातु	पाली (राजस्थान) - सबसे बड़ी खदान कड़प्पा (आंध्र प्रदेश)	1. राजस्थान 2. आंध्र प्रदेश 3. कर्नाटक	1. रूस 2. चीन	1. राजस्थान 2. आंध्र प्रदेश
क्यानाइट	अधातु	पावरी माइंस (महाराष्ट्र) - भारत में सबसे पुरानी क्यानाइट खान नवरगांव माइंस (महाराष्ट्र)	1. झारखंड 2. महाराष्ट्र 3. कर्नाटक	1. यू.एस.ए 2. चीन 3. जापान	1. महाराष्ट्र 2. झारखंड
जिप्सम	अधातु	जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर – (राजस्थान)	1. राजस्थान 2. तमिलनाडु 3. गुजरात	1. चीन 2. यू.एस.ए 3. ईरान	1. राजस्थान 2. तमिलनाडु

					3. जम्मू एवं कश्मीर
हीरा	अधातु	मझगावान पन्ना खान (मध्य प्रदेश) - भारत में हीरे की एकमात्र सक्रिय खदान	1.मध्य प्रदेश – हीरे का उत्पादन करने वाला एकमात्र राज्य	1. रूस 2. बोस्तवाना 3. कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य	
कोयला	अधातु (ऊर्जा)	कोरबा कोलफील्ड, बीरमपुर – छत्तीसगढ़ झरिया कोलफील्ड, बोकारो कोलफिल्ड, गिरडीह – झारखंड तलचर फील्ड – ओडिशा	1. छत्तीसगढ़ 2. झारखंड 3. ओडिशा	1. चीन 2. यू.एस.ए 3. भारत	1. झारखंड 2. ओडिशा 3. छत्तीसगढ़

		सिंगरूली कोलफील्ड (छत्तीसगढ़) - सबसे बड़ी			
पेट्रोलियम	अधातु (ऊर्जा)	लुनेज, अंकलेश्वर, कलोल – गुजरात मुंबई हाई – महाराष्ट्र - सबसे बड़ा ऑयल फील्ड; दिगबोई - असम - भारत में सबसे पुराना ऑयल फील्ड	1. महाराष्ट्र 2. गुजरात	1. रूस 2. सऊदी अरब 3. यू.एस.ए	1. गुजरात 2. महाराष्ट्र

यूरेनियम	परमाणु	जादूगुड़ा खान (झारखंड) तुम्मलपल्ले खान (आंध्र प्रदेश) - सबसे बड़ी खदान डोमिआसियाट खान (मेघालय)	1. आंध्र प्रदेश 2. झारखंड 3. कर्नाटक	1. कजाकिस्तान 2. कनाडा 3. ऑस्ट्रेलिया	1. झारखंड 2. आंध्र पदेश 3. कर्नाटक
थोरियम	परमाणु		1. केरल 2. झारखंड 3. बिहार	1. ऑस्ट्रेलिया 2. यू.एस.ए 3. भारत	1. आंध्र प्रदेश 2. तमिलनाडु 3. केरल

दुनिया के महत्वपूर्ण जलडरुमध्य

क्र.सं.	जलडरुमध्य का नाम	टिप्पणी
1)	पॉल्क जलडरुमध्य	यह बंगाल की खाड़ी को मन्नार की खाड़ी से जोड़ता है।

2)	जिब्राल्टर का जलडमरूमध्य	यह अटलांटिक महासागर को भूमध्य सागर से जोड़ता है और दक्षिण में मोरक्को से उत्तर में जिब्राल्टर और स्पेन को अलग करता है।
3)	डंकन मार्ग	यह उत्तर और लिटिल अंडमान के दक्षिण में रटलैंड को अलग करने वाला एक जलडमरूमध्य है।
4)	नौ डिग्री चैनल	यह चैनल कालापेनी, सुहेली पार एवं मलिकू एटोल के लैकाडिव द्वीप समूह को जोड़ता है।
5)	दस डिग्री चैनल	यह बंगाल की खाड़ी में निकोबार द्वीप समूह से अंडमान द्वीप समूह को अलग करता है।
6)	होरमुज का जलडरुमध्य	यह दक्षिण-पश्चिम में यू.ए.ई और ओमान के बीच और उत्तर-पूर्व में ईरान के बीच स्थित है। यह फ़ारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ता है। यह रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह खाड़ी देशों के तेल व्यापार को नियंत्रित करता है।
7)	बाब-अल–मंदाब का जलडरुमध्य	यह लाल सागर को एडेन की खाड़ी से जोड़ता है, और एशिया को अफ्रीका से अलग करता है।

8)	मलक्का जलडरुमध्य	यह प्रायद्वीपीय मलेशिया को इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप से अलग करता है। यह प्रशांत महासागर को हिंद महासागर से जोड़ता है। यह अंडमान सागर से दक्षिण चीन सागर के लिए एक छोटा मार्ग प्रदान करता है और इसलिए यह दुनिया का सबसे व्यस्त जलमार्ग है।
9)	सुंदा जलडमरूमध्य	यह जावा सागर को हिंद महासागर से जोड़ता है और इंडोनेशिया के जावा द्वीप को इसके सुमात्रा द्वीप से अलग करता है।
10)	बेरिंग जलडमरूमध्य	यह रूस और अलास्का को अलग करता है, और आर्कटिक महासागर में पूर्वी साइबेरियाई सागर को प्रशांत महासागर में बेरिंग सागर से जोड़ता है।
11)	ओरान्तो जलडमरूमध्य	एड्रियाटिक सागर को आयोनियन सागर से जोड़ता है तथा इटली को अल्बानिया से अलग करता है।
12)	बोस्फोरस जलडमरूमध्य	काला सागर को मर्मारा सागर से जोड़ता है। यह दुनिया का सबसे संकीर्ण नौगम्य जलडरुमध्य है।

13)	डारडेनेल्लेस जलडमरूमध्य	यह एशियाई तुर्की और यूरोपीय तुर्की के बीच स्थित है, और एजियन सागर को मर्मरा सागर से जोड़ता है। यह काला सागर और भूमध्य सागर के बीच परिवहन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।
14)	ला परौसेस जलडमरूमध्य	यह जापान के सखालिन द्वीप और होक्काइडो द्वीप के बीच स्थित है और सी ऑफ जापान के साथ ओखोत्स्क के सागर को जोड़ता है।
15)	टर्टरी/टार्टर का जलडरुमध्य	यह रूसी द्वीप सखालिन को मुख्यभूमि एशिया से अलग करता है। यह उत्तर में ओखोटस्क सागर को दक्षिण में जापान के सागर से जोड़ता है।
16)	सुगारु जलडमरूमध्य	यह उत्तरी जापान में होक्काइडो और होन्शू के बीच स्थित है और जापान सागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है।
17)	ताइवान जलडमरूमध्य या फोरमोसा जलडमरूमध्य	यह ताइवान (चीन गणराज्य) और मुख्यभूमि चीन (पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ़ चाइना) के बीच स्थित है। यह दक्षिण चीन सागर को पूर्वी चीन सागर से जोड़ता है।

18)	मोज़ाम्बीक जलडमरूमध्य	यह मेडागास्कर से मोजाम्बिक के बीच हिंद महासागर में स्थित है।
19)	यूकातान जलडमरूमध्य	यह मेक्सिको और क्यूबा के बीच स्थित है, और मैक्सिको की खाड़ी को कैरेबियन सागर से जोड़ता है।
20)	फ्लॉरिडा जलडमरूमध्य	यह संयुक्त राज्य अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य और क्यूबा के बीच स्थित है।
21)	हडसन जलडमरूमध्य	यह लैब्राडोर सागर के साथ हडसन की खाड़ी (कनाडा) को जोड़ता है।
22)	डेविस जलडमरूमध्य	यह बाफिन की खाड़ी को अटलांटिक महासागर से जोड़ता है।
23)	कुक जलडमरूमध्य	यह न्यूजीलैंड के उत्तर और दक्षिण द्वीपों के बीच स्थित है, और तस्मान सागर को दक्षिण प्रशांत महासागर से जोड़ता है।
24)	बास जलडमरूमध्य	यह तस्मानिया को ऑस्ट्रेलियाई मुख्य भूमि से अलग करता है।

25)	टोर्रेस जलडमरूमध्य	यह प्रशांत महासागर में, ऑस्ट्रेलिया के केप यॉर्क प्रायद्वीप और पापुआ न्यू गिनी के बीच स्थित है
26)	मैगलन जलडमरूमध्य	यह मुख्य भूमि दक्षिण अमेरिका को टिएरा डेल फ्यूगो से अलग करता है (दक्षिण मुख्यभूमि के सबसे दक्षिणीसिरे पर स्थित एक द्वीपसमूह)
27)	डोवर जलडमरूमध्य	यह इंग्लिश चैनल के सबसे संकरे हिस्से में स्थित है, जो इसे उत्तरी सागर से जोड़ता है। यह ब्रिटेन को महाद्वीपीय यूरोप से अलग करता है।
28)	नॉर्थ चैनल	यह आयरलैंड को स्कॉटलैंड से अलग करता है, और आयरिश सागर को अटलांटिक महासागर से जोड़ता है।

जलडमरूमध्य के संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य

- सबसे लंबा जलडरुमध्य: मलक्का जलडरुमध्य (800 कि.मी) अंडमान सागर को दक्षिण चीन सागर (प्रशांत महासागर) से जोड़ता है।
- सबसे संकीर्ण जलडरुमध्य: काले सागर (ब्लैक सी) को मर्मारा सागर से जोड़ने वाला बोस्फोरस का जलडरुमध्य।
- बेरिंग जलडमरूमध्य एशिया को अमेरिका से अलग करता है।
- बॉस जलडमरूमध्य ऑस्ट्रेलिया को तस्मानिया से अलग करता है।

- जिब्राल्टर जलडरुमध्य अफ्रीका को यूरोप से अलग करता है।

जलवायु और इसके कारक

वायुमंडल

- गैस और वाष्प वायुमंडल बनाते हैं, जब वे सौर ऊर्जा प्राप्त करते हैं, तो यह 'जलवायु' को जन्म देते है। इस प्रकार, जलवायु को विशेष समय में एक क्षेत्र की औसत वायुमंडलीय स्थितियों के रूप में परिभाषित किया जाता है। जब वायुमंडलीय स्थिति का यह विचार निश्चित समय पर निश्चित स्थान के लिए होता है तो इसे मौसम कहा जाता है।
- वायुमंडल की पाँच परतें हैं। वो है:

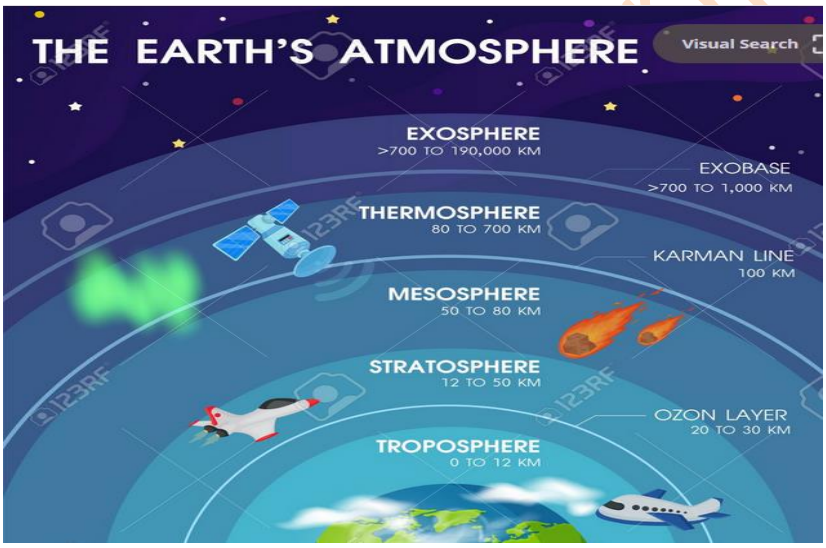

जलवायु के तत्व

1. तापमान
2. तलछट
3. वर्षा

4. दबाव और ग्रहों की हवाएं
5. भूमि और समुद्री हवाएँ
6. चक्रवाती गतिविधि

तापमान

तापमान निम्नलिखित कारकों का फैसला करता है-

- जल वाष्प की मात्रा, हवा की नमी-वहन क्षमता।
- वाष्पीकरण और संघनन की दर, वातावरण के स्थिरता की डिग्री को नियंत्रित करना
- प्रकृति को प्रभावित करने वाली सापेक्ष आर्द्रता और बादल निर्माण के तरीको और तलछट के प्रकार ।

तापमान को प्रभावित करने वाले कारक

1. अक्षांश - पृथ्वी के झुकाव के कारण भूमध्यरेखीय क्षेत्रों से ध्रुवों तक तापमान कम हो जाता है। सीधी किरणें कम दूरी तय करती हैं और छोटी सतह को गर्म करती हैं जबकि तिरछी किरणें लंबी दूरी तय करती हैं और बड़े क्षेत्र को गर्म करती हैं।
2. ऊँचाई - समुद्र तल से ऊँचाई बढ़ने के साथ – साथ तापमान घटता जाता है। बढ़ती ऊंचाई के साथ तापमान में कमी की इस दर को 'लैप्स रेट' कहा जाता है। यह दर स्थिर नहीं होती है। लैप्स दर रात की तुलना में दिन में अधिक होती है, मैदानी इलाकों की तुलना में उच्च स्तर के इलाको पर अधिक होती है।

3. महाद्वीपीयता - जल की उच्च विशिष्ट ऊष्मा के कारण भूमि की सतह जल की सतह से अधिक जल्दी गर्म हो जाती है। (विशिष्ट ऊष्मा वह आवश्यक ऊर्जा है जिसके द्वारा दिये गए आयतन का तापमान 1 डिग्री फ़ारेनहाइट बढाया जाता है)
4. महासागरीय धाराएँ और हवायें - दोनों समीप के क्षेत्रों में अपनी ऊष्मा या शीतलता पहुँचाती हैं। तट पर चलने वाली हवाएँ समुद्र की धाराओं को भूमि की ओर ले जाती हैं जिससे एक क्षेत्र का तापमान प्रभावित होता है। स्थानीय हवाएं भी अपने तापमान के अनुसार वातावरण के तापमान में बदलाव करती हैं।
5. ढलान, आश्रय और पहलू - खड़ी ढलान कोमल ढलान की तुलना में तापमान में तेजी से बदलाव दिखाती है। आश्रय ढलान (उत्तर की ओर) में धूप ढलान (दक्षिण की ओर) की तुलना में तापमान कम है।
6. प्राकृतिक वनस्पति और मिट्टी - मोटी वनस्पति में खुले स्थानों की तुलना में कम तापमान होता है। मिट्टी का रंग (हल्का या गहरा) तापमान में मामूली बदलाव को जन्म देता है।

तलछट

- जब संघनन जमीनी स्तर पर होता है, तो धुंध या कोहरा बनता है।
- जब जल वाष्प का संघनन वायुमंडल में हिमांक तापमान से नीचे पर होता है, तो बर्फ गिरती है।
- जब नम हवा तेजी से वातावरण की ठंडी परतों पर चढ़ती है, तो पानी की बूंदें जम जाती हैं और पृथ्वी पर बौछाड़ या ओलों के रूप में गिरती हैं।
- कुछ वर्षा की बूंदे पिघलती है और फिर से जम जाती है और फिर पानी के साथ ओलावृष्टि होती है|

वर्षा

- संवहन वर्षा: जब पृथ्वी की सतह संवाहन से गर्म हो जाती है, तो यह हवा के संपर्क में आती है। इस गर्म हवा में नमी को धारण करने की क्षमता होती है। यह हवा ऊपर उठती है और ठंडी हो जाती है। जब संतृप्ति बिंदु पर पहुंच जाती है, तो वर्षा होती है। उच्च सापेक्ष आर्द्रता वाले क्षेत्रों में, यह नमी ले जाने की क्षमता बहुत अधिक होती है, जिसके परिणामस्वरूप मूसलधार बारिश होती है। संवहन धारा विस्तार, शीतलन, संतृप्ति और अंत में संघनन की प्रक्रिया से गुजरती है।
- पर्वतीय वर्षा: जब नम हवा पर्वत बाधा के घुमावदार पक्ष पर चढ़ती है, तो यह पूरी संतृप्ति और भौगोलिक बादलों के रूप तक ठंडी हो जाती है। ऊपर की तरफ तलछट होती है। हवा की ओर एक वर्षा छाया क्षेत्र के बनता है जहां आमतौर पर कम तलछट होती है।
- चक्रवाती या अग्र वर्षा: जब विभिन्न तापमान और विभिन्न भौतिक गुणों के साथ वायु द्रव्यमान मिलते हैं, तो गर्म हवा ठंडी हवा से ऊपर बढ़ जाती है। चढ़ाई में, हवा फैलती है और ठंडी होने लगती है। संघनन के रूप में चक्रवाती या अग्र वर्षा होती है।

जनगणना 2011 के महत्वपूर्ण तथ्य

जनगणना 2011

- जनगणना एक देश की जनसंख्या के संदर्भ में सांख्यिकी आंकड़ों को एकत्र करने, संकलित करने, विश्लेषण, मूल्यांकल, प्रकाशन और प्रसार करने की प्रक्रिया है।
- इसमें जन्म-मृत्यु से संबंधित आंकड़े, सामाजिक और आर्थिक आंकड़े शामिल होते हैं।
- इसे हर दस वर्ष में आयोजित किया जाता है।
- इसे 1871 में प्रारंभ किया गया था।

- वर्ष 2011 की जनगणना 31 मार्च, 2011 को केंद्रीय गृह सचिव और भारतीय आर.जी.आई द्वारा जारी की गई थी।
- जनगणना 2011 भारत की 15वीं जनगणना और स्वतंत्रता के बाद 7वीं जनगणना थी।
- जनगणना 2011 का आदर्श वाक्य 'हमारी जनगणना, हमारा भविष्य' था।
- रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त, जिनके तहत जनगणना 2011 आयोजित की गई थी- सी. चंद्रा मौली
- वर्तमान रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त– श्री शैलेश
- कुल जनसंख्या- 1,210,569,573 (1.21 बिलियन)
- 17.64% की दशक वृद्धि के साथ भारत जनसंख्या में दूसरे स्थान पर है।
- 2001-2011 के दौरान जनसंख्या में वृद्धि 181 मिलियन है।
- जनगणना 2011 दो चरणों में आयोजित की गई थी:

  हाउसलिस्टिंग और हाउसिंग जनगणना (अप्रैल से सितम्बर, 2010)

  जनसंख्या गणना (9 से 28 फरवरी, 2011)
- जनगणना 2011 में प्रशासनिक इकाइयों की संख्या

  राज्य / संघ शासित प्रदेश 35

  जिले 640

  उप-जिले 5,924

  कस्बे 7,936

  गांव 6.41 लाख

जिलों के बारे में तथ्य

- महाराष्ट्र का ठाणे जिला भारत का सबसे अधिक आबादी वाला जिला है।
- अरुणाचल प्रदेश की दीबांग घाटी निम्नतम आबादी वाला जिला है।
- अरुणाचल प्रदेश के कुरुंग कुमी ने 111.01 प्रतिशत की उच्चतम जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की है।
- नागालैंड के लांगलेंग जिले ने (-) 58.39 प्रतिशत की नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की है।
- पुडुचेरी के माहे जिले में सबसे ज्यादा लिंग अनुपात 1176 महिलायें प्रति 1000 पुरुष है।
- दमन जिले में सबसे कम लिंग अनुपात 533 महिलायें प्रति 1000 पुरुष है।
- मिजोरम के सर्चिप जिले की साक्षरता दर सबसे अधिक 98.76 प्रतिशत है।
- 37.22 प्रतिशत के आंकड़े के साथ मध्य प्रदेश का अलीराजपुर भारत का निम्नतम साक्षर जिला है।
- 37,346 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के आंकड़े के साथ उत्तर-पूर्वी दिल्ली सबसे ज्यादा घनत्व वाला है।
- दिबांग घाटी में प्रति व्यक्ति घनत्व सबसे कम एक व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी है।

शहरों के बारे में तथ्य

- महाराष्ट्र का मुंबई शहर सबसे अधिक आबादी वाला शहर है।
- पंजाब का कपूरथला शहर कम आबादी वाला शहर है।
- केरल के कोझीकोड़ में प्रति 1000 पुरुषों में 1093 महिलाओं का अधिकतम लिंग अनुपात है।
- महाराष्ट्र के भिवंडी शहर में सबसे कम लिंग अनुपात 709 महिला प्रति 1000 पुरुष है।
- मिजोरम के आइजोल शहर में साक्षरता दर सबसे ज्यादा 98.76 प्रतिशत है।
- 48 प्रतिशत के साथ यू.पी का संभल शहर भारत का सबसे कम साक्षर शहर है।

- 37346 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के आंकड़े के साथ उत्तर-पूर्वी दिल्ली सबसे ज्यादा घनत्व वाला जिला है।

विशेषताएं	**भारत**	**शीर्ष तीन राज्य**	**अंतिम तीन राज्य**	**अन्य तथ्य**
औसत वार्षिक वृद्धि दर	1.64 %	1. मेघालय (2.49 %) 2. अरुणाचल प्रदेश (2.3 %) 3. बिहार (2.26 %)	1. गोवा (.79%) 2. आंध्र प्रदेश (1.07%) 3. सिक्किम (1.17%)	2001-2011 के दौरान देश की लगभग 85% आबादी के हिस्से के साथ 25 राज्यों / संघ शासित प्रदेशों में 2% से कम की वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की गई।

दशक वृद्धि दर	17.60%	4. मेघालय (27.8 %) 5. अरुणाचल प्रदेश (25.9 %) 6. बिहार (25.1 %)	1. नागालैंड (-0.5 %) 2. केरल (4.9 %) 3. गोवा (8.2 %)	· नागालैंड एक मात्र ऐसा राज्य है जिसकी विकास दर नकारात्मक है। · सबसे अधिक और सबसे निम्नतम दशक विकास दर वाले जिले क्रमशः कुरुंगकुमे और लांगलेंग थे।
जनसंख्या घनत्व	382	1. बिहार (1,106 प्रति वर्ग कि.मी) 2. पश्चिम बंगाल (1030 प्रति वर्ग कि.मी)	1. अरुणाचल प्रदेश (17 प्रति वर्ग कि.मी) 2. मिजोरम (52 प्रति वर्ग कि.मी 3. जम्मू और कश्मीर (56 प्रति वर्ग कि.मी)	· शीर्ष दो जिले: उत्तर- पूर्वी (दिल्ली एन.सी.टी) और चेन्नई · अन्तिम दो जिले: दिबांग घाटी और साम्बा।

byjusexamprep.com

		3. केरल (859 प्रति वर्ग कि.मी)		

byjusexamprep.com

जनसंख्या (संख्या के आधार पर)	कुल- 1210.19 मिलियन पुरुष – 623.7 मिलियन (51.54%) महिला – 586.46 मिलियन (48.46%) ग्रामीण जनसंख्या– 833 मिलियन शहरी जनसंख्या- 377 मिलियन	कुल 1. उत्तर प्रदेश (19.9 मिलियन , 16.5%) 2. महाराष्ट्र (11 मिलियन - 9.28%) 3. बिहार (10 मिलियन - 8.6%) पुरुष 1. यू.पी. 2. महाराष्ट्र 3. बिहार महिला	कुल 1. सिक्किम (6.07 लाख - 0.05%) 2. मिजोरम (10.9 लाख - 0.09 %) 3. अरुणाचल प्रदेश (13.8 लाख- 0.11%) पुरुष 1. सिक्किम 2. मिजोरम 3. अरुणाचल प्रदेश महिला 1. सिक्किम 2. मिजोरम 3. अरुणाचल प्रदेश ग्रामीण जनसंख्या	· शीर्ष मेट्रो 1. मुम्बई (18,394,912) 2. दिल्ली 3. चेन्नई · भारत की आबादी यू.एस.ए, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश और जापान की संयुक्त आबादी (1214.3 मिलियन) के बराबर है। · शीर्ष दो जिले: थाणे

		1. यू.पी. 2. महाराष्ट्र 3. बिहार ग्रामीण जनसंख्या 1. यूपी 2. बिहार 3. पश्चिम बंगाल शहरी जनसंख्या 1. महाराष्ट्र 2. यू.पी. 3. तमिलनाडु	1. मिजोरम 2. सिक्किम 3. गोवा शहरी जनसंख्या 1. सिक्किम 2. अरुणाचल प्रदेश 3. नागालैंड	(महाराष्ट्र) और उत्तर 24 परगना (पश्चिम बंगाल) · अन्तिम दो जिले : दिबांग घाटी (अरुणाचल प्रदेश) और एनजॉ (अरुणाचल प्रदेश)

लिंग अनुपात	940	1. केरल (1084) 2. तमिलनाडु (996) 3. आंध्र प्रदेश (993)	1. हरियाणा (879) 2. जम्मू और कश्मीर (889) 3. सिक्किम (890)	· 1971 से की गई जनगणना का ये अब तक का सबसे उच्चतम लिंग अनुपात है। · शीर्ष दो जिले : माहे और अल्मोड़ा · अन्तिम दो जिले : दमन और लेह
जनन दर (2013)	2.3	1. बिहार (3.4) 2. यूपी (3.17) 3. मेघालय (3.1)	1. सिक्किम (1.45) 2. पश्चिम बंगाल (1.6 4) 3. तमिलनाडु (1.7)	

byjusexamprep.com

साक्षरता दर	कुल -74% पुरुष – 82.14% महिला -65.46	कुल 1. केरल (93.9%) 2. मिजोरम (91.6%) 3. त्रिपुरा (87.8%) पुरुष 1 केरल (96 %) 2. मिजोरम (93.7%) 3. गोवा (92.8%) महिला 1. केरल (92%)	कुल 1. बिहार (63.80%) 2. अरुणाचल प्रदेश (67%) 3. राजस्थान (67.11%) पुरुष 1. बिहार (73.5%) 2. अरुणाचल प्रदेश (73.7 %) 3. आंध्र प्रदेश(75.6 %) महिला 1. राजस्थान (52.7%) 2. बिहार (53.3%) 3. जम्मू और कश्मीर (58%)	· धर्म के आधार पर उच्चतम साक्षरता दर – जैन (94%) > ईसाई (80%) > बौद्ध (74%) · क्षेत्र – ग्रामीण (68.9%) · शहरी (85%) · 9.21 प्रतिशत अंक वृद्धि के साथ 2001 में 64.83 प्रतिशत से 2011 में साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत दर्ज की गई। · दस राज्य और केंद्र शासित प्रदेश

		2. मिजोरम (89.4%) 3. त्रिपुरा (83.1%)		अर्थात् केरल, लक्ष्यद्वीप आदि · 47 · मिजोरम, त्रिपुरा, गोवा, दमन और दीव, पुडुचेरी, चंडीगढ़, दिल्ली एन.सी.टी और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह ने साक्षरता दर 85 प्रतिशत से ऊपर हासिल की है। · 2001 की जनगणना में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच दर्ज 21.59

byjusexamprep.com

				प्रतिशत अंकों का अंतर 2011 में कम होकर 16.68 प्रतिशत हो गया है। · शीर्ष दो जिले : सर्चिप और आईजोल · अन्तिम दो जिले: अलीराजपुर और बीजापुर

byjusexamprep.com

कार्य भागीदारी दर	· कुल (39%) · पुरुष (45%) · महिला (14%)	1. मिजोरम	1. केरल 2. गोवा	
जनजाति	· 550 जनजाति · भारत की कुल आबादी का 8.2% · 10 मिलियन जनसंख्या	जनसंख्या के अनुसार 1. एम.पी (1.5 मिलियन) 2. महाराष्ट्र (1.0 मिलियन) 3. गुजरात (.89 मिलियन)	जनसंख्या के अनुसार 1. पंजाब (शून्य) 2. हरियाणा (शून्य) 3. गोवा (32,000) जनजाति घनत्व के अनुसार 1. पंजाब (शून्य) 2. हरियाणा (शून्य)	

		जनजाति घनत्व के अनुसार 1. मिजोरम 2. नागालैंड 3. मेघालय		
राज्य (क्षेत्रफल)	32.87 लाख वर्ग कि.मी	1. राजस्थान (3.42 लाख वर्ग कि.मी) 2. एम.पी. (3.08 लाख वर्ग कि.मी) 3. महाराष्ट्र (3.07 लाख वर्ग कि.मी)	1. गोवा (3702 वर्ग कि.मी) 2. सिक्किम (7096 वर्ग कि.मी) 3. त्रिपुरा (10,486 वर्ग कि.मी)	

शहरीकरण		1. गोवा (62%) 2. मिजोरम (52%) 3. तमिलनाडु (48%)	1. हिमाचल प्रदेश (10%) 2. बिहार (10.29%) 3. असम (14%)	महाराष्ट्र में शहरों की संख्या अधिकतम– 18 है।
बस्तियां	कुल आबादी का 6.5 मिलियन	1. महाराष्ट्र (1.1 मिलियन) 2. आंध्र प्रदेश 3. तमिलनाडु	1. अरुणाचल प्रदेश (15,000) 2. गोवा 3. सिक्किम	

बाल लिंग अनुपात (0-6 वर्ग समूह में प्रति 1000 पुरुषों में महिलायें)	914	1. मिजोरम(971) 2. मेघालय (970) 3. छत्तीसगढ़ (964)	1. हरियाणा (830) 2. पंजाब (846) 3. जम्मू और कश्मीर (859)	· भारत में 1000 पुरुषों पर 1000 महिलायें पार करने वाला कोई भी राज्य नहीं है। · 0-6 आयु वर्ग तक में बच्चों की संख्या 158.8 मिलियन है (वर्ष 2001 से -5 मिलियन) · स्वतंत्रता के बाद से भारतीय स्तर पर बाल लिंग अनुपात (914) सबसे निम्नतम रहा है।

byjusexamprep.com

0-6 आयु वर्ग में बच्चों की जनसंख्या का समानुपात	13.10%	1. मेघालय (18.8%) 2. बिहार (17.9%) 3. जम्मू और कश्मीर (16%)	1. तमिलनाडु (9.6%) 2. गोवा (9.6%) 3. केरल (10%)	
वर्तमान मूल्य पर प्रति व्यक्ति नेट राज्य घरेलू उत्पाद (2011-12)	60972 रूपये	1. गोवा (1,92,000 रुपये) 2. हरियाणा (1,09,000 रुपये) 3. तमिलनाडु (84,000 रुपये)	1. बिहार (24,000 रुपये) 2. यू.पी. (29,000 रुपये) 3. झारखण्ड (32,000 रुपये)	

गरीबी रेखा के नीचे का जनसंख्या प्रतिशत (तेंदुलकर क्रियाविधि)	29.8% (2011-12)	1. बिहार 2. छत्तीसगढ़ 3. मणिपुर	1. गोवा 2. जम्मू और कश्मीर 3. हिमाचल प्रदेश	
आयु संरचना	· किशोर (36.5%) · वयस्क (56.7%) · वृद्ध (6.8%)			
प्रमुख भाषायें	1. हिन्दी (40%) 2. बंग्ला (8%) 3. तेलगू (7.8%)			
	भाषा परिवार			

byjusexamprep.com

	1. इंडो – यूरोपियन (आर्यन – 73%) 2. द्रविड़न (20%) 3. आस्ट्रिक (निषाद - 1.3%)	
जनसंख्या का धर्म के अधार पर प्रतिशत	धर्म संख्या(जनसंख्या प्रतिशत) · हिन्दू 96.63 करोड़ (79.8 %) · मुस्लिम 17.22 करोड़ (14.2%) · ईसाई 2.78 करोड़ (2.3%) · सिक्ख 2.08 करोड़ (1.7%) · बौद्ध 0.84 करोड़ (0.7%) · जैन 0.45 करोड़ (0.4%)	हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख राज्य में 28,